ॐतत्सत्

महामारीका विवेचन.

पं० मुरलीधर शर्मा सं० आ० सु० फर्रुखनगर-
निवासी राजवैद्य रियासत सैलानाने निर्माण किया.

जिसमे

महामारी (प्लेग) के हेतु सम्प्राप्ति लक्षण और उपाय
आदि आयुर्वेदीय सद्ग्रंथोंके प्रमाणपूर्वक वर्णित है ।

ORIGIN OF PLAGUE AND ITS CURE.

COMPILED BY

P Murlidhar Sharma of
Farukhnagar
Raj Vaidya Sailana C I

जिस्को

खेमराज श्रीकृष्णदासने

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें
मुद्रितकर प्रसिद्धकिया ।

शके १८२०, संवत् १९५५

भूमिका।

जबसे इस देशके कई प्रांतोंमें महामारीका प्रादुर्भाव हुवा है
बसे मनुष्योंको कितना क्लेश सहना पडा है यह किसीसे भी
पा नहीं है।

हमारी दयाशीला सरकारकी तरफसे बडे २ विद्वान् डाक्टर
हाशय इसका विवेचन करचुके और कर रहे हे परन्तु देशके सभी
द्वानों क्या मनुष्य मात्रका धर्म है कि, राजा प्रजाकी शुभ चित-
ता और सेवाका भाग यथाशक्ति ग्रहण करे।

इसीलिये मेने अपने देशके आयुर्वेद (वैद्यक विद्या) के बडे
डे प्रामाणिक ग्रथो आदिसे निर्णय ओर निश्चय करके यह "महा
री विवेचन" नामक पुस्तक निर्माण किया हे कि, जिससे
नुष्यों को लाभ पहुँचे और प्रकट होवे कि इस देशकी सनातन
स्कृत वैद्यक विद्यामें कैसी कैसी उत्तम बाते दबी हुई मिल
कती हे।

शुभचिंतक,

० मुरलीधर शर्मा म० आ० सु० फर्रुखनगर निवासी

राजवैद्य सैलाना स्टेट मुल्क मालवा

ORIGIN OF PLAGUE AND ITS CURE
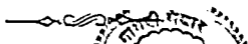
This pamphlet about the origin of Plague and its cure has been prepared on the basis and references of most of the learned and experienced Vaids and in the proofs the shloks (श्लोक) of the worthy and much valued old Sanscrit Vaidic books are given and it is proved also with the discussion and experience according to present age Every body can undoubtedly know that how higher and prosperous was the enquiry and experience of the old Indian Vaids and how many good things are found buried often from the Indian Sanscrit Vaidic knowledge

The following are the contents of the pamphlet

श्रीः।

महामारीविवेचन विषयानुक्रमणिका।

आशय	पृष्ठाङ्क
ईश्वरकाधन्यवाद–पुस्तकारंभ	६
महामारियोंके कारण चरकोक्त	८
" सुश्रुतोक्त	१३
इसपर वादानुवाद	१५
इसमहामारीकाहेतु	१९
" समाप्ति	२२
इसके लक्षण सुश्रुतोक्त और वाग्भट्टोक्त	२३
इसमे कीट भी होतेहै	२५
इसका विष ठैरकर कुपित होताहै	"
कोप होनेका समय और कारण	२६
इसकी असाध्यता	२८
इसपर प्रत्यक्ष प्रमाण	२९
फैलनेका कारण	"
इसके उपाय प्रथम ईश्वरसे प्रार्थना	[illegible]
इससे रक्षित रहनेके नियम	३०
सामूहिक उपाय देशग्रामादि निर्विषकरण	३४
महामारीपीडितरोगीकी चिकित्सा	३६

श्रीः ।

ॐ तत्सत् परमेश्वराय नमः ।

महामारीका-विवेचन ।

प्रथम हमको ईश्वरका अनेक धन्यवाद करना चाहिये कि जिसने हम भारतवासियोको एसी प्रजापालक सरकार अंग्रेजीके राज्यमें सुखका समय दिया जिसमे गरीब अमीर सभी आनंदमे मग्न होकर जयध्वनि कररहे है हमारी दयाशीला सरकार अपनी प्रजाके एक एक मनुष्यको पुत्रके समान जान उसकी रक्षा और दुःखनिवृत्तिके लिये पूर्ण प्रयत्न करनेमें कभी नही छोडती नगर नगरमे स्कूल और अस्पताल बनाये है जहां निर्भय और निर्व्यय बहुतेरे मनुष्य शिक्षा और आरोग्यता प्राप्त करनेके अर्थ जाते है ॥

दूर क्यों जावो देखो एक महामारी (प्लेग) रोगके पैदा होनेमे इसके दमनार्थ लाखो रुपये सरकारके खर्चहुवे और होरहेहै देश देशांतरसे बडे २ अनुभवी डाक्टरोका आवाहन किया जाताहै यहां परभी इसके लिये सैकडो क्या हजारो ही मनुष्य दमन प्रबंधार्थ नियत कियेजाते है ॥

यद्यपि इसके दमन यत्नोमे पूर्णतया सफलता प्राप्तनहीं हुई इसमे हमारी सरकारकी तरफसे कोई

प्रकारकी कमी नहीं रही यह केवल कालचक्र या रोगकी पूर्णतया मीमांसा पर बुद्धिकी पहुँच न होनेका प्रभावहै महामान्य डाक्टर साहिबोंने इसके निदान और उपाय करनेमें वाल बराबरभी त्रुटि नही करी अनेक उत्तमोत्तम युक्तिया निकालीं कई प्रबंध किये तो भी दैववश इसका ठीक कारण और सिद्ध उपाय अभीतक निर्मित न हुवा ॥

यह सभी बुद्धिमान् जानते और मानतेहै कि हरेक देश देशातरमें हरेक प्रकारके ऐसे सविष वृक्ष वनस्पति तथ। सविष जीवजंतु-कृमि लूतादि होतेहै अथवा उत्पन्न होजाया करते है तथा ऋतु आदिकी विपरीततासे वायु जल आदि दूषित होजाया करते है जो अनेक भयंकर रोगोका कारण होते है जिनका अनुभव दूसरे देशके महाविद्वान्को सहजमे नहीं होसकता और इसी प्रकार दूसरे देशोके खानपान बरताव आदिका पूरा पूरा अनुभव नहीं होता तो फिर तज्जन्य व्याधियो और उनकी शांतिके सहल यत्नोका परिपूर्ण अनुभव सहजहीमे कैसे होसकताहै ॥

अन्य देशो रूस इगलैंड आदिमे जब कभी ऐसी व्याधिया होती है तो उन देशोके स्थावर जगम पदार्थोंके अनुसार वहां उनके कारणों और यत्नोको वहां के अनुभवी विद्वानोंने निश्चय किया ही होगा परंतु

जब इस देश या इस महादेशके किसी प्रांतमें ऐसी भयंकर व्याधियां होती है तो उनके लक्षणोंके अनुसार कई कारण होतेहै और साधारण रूपसे उन्हे " जनपदोद्धंसनीय " कहते है॥

जनपदोद्धंसनीय का अर्थ केवल यही है कि ऐसी व्याधि जो जन समूहमे फैलकर देश या जनसमूहको नष्ट करे इससे अभी पाठक यह नही समझे कि एक गोल मोलसी बात कहकरही छोडदिया जावेगा नहीं यह जनपदोद्धंसनीय तो एक साधारण नाम है (जैसे महामारी या वबा या मरी) अगाडी हम इसके कारण और भेद नाम और लक्षण तथा यत्न इन सभी बातोका पूरा विवेचन लिखेगे॥

किस किस देशमें कबकब महामारियां हुई यह इतिहास लिखकर हम लेख बढाना नही चाहते क्यो कि अनेक देशोंमे अनेकवार अनेक रूपसे महामारियां होती है और उनके कारणभी प्रायः सर्वत्र एकसे नही होते कभी कही जलके बिगाडसे कभी कही वायुके बिगडनेसे कभी कही सविष वनवृक्षादिका विशेषता और विचित्रता आदिसे कभी कही सविष जीवजंतु कृमिलूतादिके प्रादुर्भावसे महामारियां उत्पन्न हुई और होतीहै इत्यादि और जहां जहां जैसे जैसे कारणकी उत्कृष्टता होतीहै उसीके अनुसा

महामारीके लक्षणों और उपद्रवोंमे प्रायः अंतर होताहै ॥

महामारियोंके कारण–

देखो चरकसहिता जनपदोद्ध्वंसनीय अध्याय ।

अपि तु खलु जनपदोद्ध्वंसनमेकेन व्याधिना युगपदसमानप्रकृत्याहारदेहबलसात्म्यसत्ववयसां मनुष्याणांकस्माद्भवतीति ॥

अर्थ–अग्निवेश ऋषिने महर्षि आत्रेयजीसे पूंछाकि महाराज भिन्न भिन्न प्रकृतिवाले तथा जुदेजुदे प्रकारके आहार करने वाले और अनेक प्रकारके शरीर बल सात्म्य (सानुकूलता) सत्व और अवस्थावाले बहुतसे मनुष्योंको एक समयमे प्रायः एक ही भांतिकी व्याधि किस कारणसे उत्पन्न होकर जनसमूहको नष्ट करती है ॥

तमुवाच भगवानात्रेयः । एवमसामान्यानामेभिरप्यग्निवेश प्रकृत्यादिभिर्भावैर्मनुष्याणां येन्ये भावाःसामान्यास्तद्वैगुण्यात् समानकालाः समानलिंगाश्च व्याधयोभिनिवर्तमाना जनपद

मुद्ध्वंसयंति तेखलु इमे भावाः सामान्या-
ज्जनपदेषु भवति तद्यथा वायुरुदकं देशः
काल इति ॥

श्री भगवान् आत्रेयजी बोले कि हे अग्निवेश भिन्न भिन्न प्रकृति आदिके मनुष्योको भी मनुष्यमात्रको जो हितकारक सामान्य भावहै उनके बिगाड होनेसे एकही समयमे एकहीसे लक्षणोवाली व्याधि उत्पन्न होकर जनसमूहको (रोगयुक्त करके) नष्ट करती हे जो मनुष्य जातिमात्रको सामान्यरूपसे हितकारक है और जिनके बिगाडसे देशमे भयंकर व्याधियां होतीहै वे येहै जैसे वायु जल देश और काल [अर्थात् वायुमे बिगाड होना या जल बिगडजाना या देशके पार्थिव तत्वोमे विकृति होना या पृथिवीमे सविषस्थावर जंगमकी उत्पत्ति तथा वृद्धि होजाना या समय (ऋतु) मे विकार होजाना] इनमेसे हरेकका विस्तार पूर्वक वर्णन अब अगाडी लिखतेहै ॥

तत्र वातमेवंविधमनारोग्यकरं विद्यात्
तद्यथा ऋतुविषममतिस्तिमितमतिचल-
मतिपुरुषमतिशीतमत्युष्णमतिरूक्षमत्य-
भिष्यंदिनमतिभैरवारावमतिप्रतिहतपर-

स्परगतिमतिकुंडलिनमसात्म्यगंधवा-
ष्पसिकतापांशुधूमोपहतमिति ॥

इनमेसे ऐसा वायु सामूहिकरोगो (महामारी) का कारण होताहै जैसे ऋतुसे विपरीत वायु चलना अतिस्तिमित (रुकाहुवासा या नमीदार) हवाचलना बहुत तेज हवा बहुत कठोर अति ठंढी हवा अतिगरम हवा अति रूखी हवा अत्यंत भारी बहुतभयानक सन्नाटेदार परस्पर प्रतिकूल दिशाओंकी हवा (चोवाया) चलना जादे व गूलेदार हवा चलना और जिसमें प्रतिकूल गंध वाष्प (भाफ) छिन धूल और धुवांआदि मिलेहो (ऐसी २ वायु अधिक चलना भयंकर व्याधियोको उत्पन्न करता है) ॥

उदकंतुखलुअत्यर्थ विकृतगंधवर्णरस
स्पर्शवत्क्लेदबहुलमपक्रांतजलचरविहंग-
मुपक्षीणजलाशयमप्रीतिकरमपगतगुण
विद्यात् ॥

जलमे यदि नीचे लिखे अनुसार विकृति होवे तो यह भी सामूहिक रोगोका कारण होताहै जैसे अत्यंत बिगड़ी हुई गंधवाला रंगमें फरक आया हुआ तथा स्वादसे विपरीत स्पर्शसे विपरीत और अत्यंत क्लेद वाला तथा जिस जलाशय (तालाव नदी नहर कूप

आदि) मे बहुत जलचर हो अथवा एकबारही सब नष्ट होजावे या उन जलाशयोका जल सूखकर थोड़ा रहजाने पर काममे लाया जावे या जल प्रिय नही लगे या उसके गुण (अन्न पचाना तृषा शांत करना आदि) जाते रहै ॥

देशंपुनः प्रकृतिविकृतिवर्णगधरसस्पर्श क्लेदवहुलमुपसंसृष्टसरीसृपव्यालमशक-शलभमक्षिकामूपकोलूकश्मशानिकशकुनिजम्बुकादिभिस्तृणोलूपोपवनवंतं प्रतानादिवहुलमपूर्ववदनपतितशुष्कनष्टशस्यं धूम्रपवनप्रध्मातयत त्रिगणसुत्क्रुष्टश्वगणमुद्भ्रांतव्यथितविविधमृगपक्षिसघमुत्सृष्टानष्टधर्मसत्यलज्जाचारगुणजनपदं शश्वत्क्षुभितोदीर्णसलिलाशयंप्रततोल्कायातनिर्घातभूमिकम्पमतिभयारावरूपं रूक्षताम्रारुणसिताभ्रजालसंवृतार्कचन्द्रतारकमभीक्ष्णसम्भ्रमोद्वेगमिवसत्रासरुदितमिव समस्कमिवगुह्यकाचरितमिवाक्रंदितंशब्दवहुलंविद्यात्॥

देश अर्थात् पृथिवी या पार्थिव पदार्थ पहलेसे विपरीत रूपवाले विपरीत गंधवाले विपरीत रसवाले विपरीत स्पर्शवाले तथा अति क्लेद (नमी) वाले होजावे अथवा देशमें अधिक सर्प व्याल (हिंस्र जीव) विषैल मच्छर टिड्डी मक्खियां विषैल मूषक उलूक गिद्ध और जंबुक (और सविष कृमि लूता) आदि उत्पन्न होजावे अथवा देशमें नये ढंगके तृण छत्ते उपवन वृक्ष वेल (जैसे पहले कभी नहीं हुये या सविष) बहुत पैदा होजावे अथवा सूखी वनस्पति खेतीकी औषधी गली सड़ी ज्यादा होजावे तथा पृथिवीमेसे सविष नये ढंगका धूम (गैस) पैदा होजावे या विषके परमाणु लिप्त पवन से व्याकुल जीव जंतु पक्षिगण मालूम देवें कुत्ते अधिक चिल्लावे भ्रांत व्यथा युक्तसे नाना प्रकारके मृग पक्षी दीखें अथवा देशमे धर्म लज्जा सत्य आचार रहित बहुत मनुष्य होजावे या एकाएक जलाशय उझल आवें वारवार उल्कापात हो बिजली गिरे भूकंप हो अति भयानक रूक्ष ताम्रवर्ण लाल सुपेद वादलोंके जालसे सूर्य चंद्रमा तारे विशेष ढके रहें तथा भ्रम उद्वेग युक्त से भयभीतसे रोते हुयेसे व्याकुलसे गुप्तचरित्र करते हुवेसे दुःखी हुवेसे बहुधा मनुष्योंके शब्द होवे (ऐसे विकार देशमें होना भी सामूहिक रोगोंका कारण होता है) ॥

कालतुखलुयथर्तुलिंगाद्विपरीतलिंगम-
तिलिंगं हीनलिंगं चाहितं व्यवस्येत् ॥

और समय जो यथायोग्य ऋतुके लक्षणोसे विपरीत या अत्यंत अधिक या अत्यत हीन लक्षणोवाला होवे तो वह भी सामूहिक रोगोका कारण होताहे ॥

सर्वेपामग्निवेश वाय्वादीनां यद्वैगुण्य-
मुत्पद्यते तस्यमूलमधर्मः ॥

आत्रेयजी कहतेहै हे अग्निवेश इन वायु आदिमे विकार होने (देशमे महामारियो के हेतु पैदा होने) का कारण (अर्थात् हवा या पानीमे विगाड होने देशमे सविप वनवृक्ष कृमिलता मूपकादि पैदा होजानेका हेतु) मनुष्योका अधर्महीं हुवा करता है (तात्पर्य यह कि ईश्वरके कोपसे ऐसे कारण देशमे पैदा होजाया करते हे) और प्रजाको कष्ट देकर कुछ दिनोमे नष्ट होजाया करतेहै ॥

ऐसे रोगोंका कारण–

सुश्रुतसहितामें ऐसा लिखाहै ।

तेषां व्यापदोऽदृष्टकारिताः शीतोष्णवात
वर्षाणि खलु विपरीतानि ओषधीर्व्यापा-
दयंत्यपश्च तासामुपयोगात् विविधरोग

प्रादुर्भावो मारको वाभवेदिति ॥ १ ॥
कदाचिदव्यापन्नेष्वृतुपु कृत्या पिशाच
रक्षःक्रोधाधर्मैरुपध्वस्यंते जनपदाः ॥२॥
विपौपधिपुष्पगंधेन वायुनोपनीतेनाऽऽ
क्रम्यते यो देशस्तत्र दोपप्रकृत्य विशे-
पेण कासश्वासवमथुप्रतिश्यायशिरो-
रुग्ज्वरैरुपतप्यते ॥ ३ ॥ (निबंधसंग्रह
सुश्रुतटीकायां कासश्वासेत्यत्र " कास-
श्वासप्रतिश्यायगंधाज्ञानभ्रमशिरोरुग्
ज्वरमसूरिकादिभिरुपतप्यते " इति
पाठांतरम् ग्रहनक्षत्रचरितैर्वा ॥ ४ ॥

इन ऋतु आदिमे दैवयोगसे शीत उष्ण वायु वर्षा आदि यदि विपरीत होजावे तो वे औपधि (अन्न आदिक) और जलको विकार युक्त उत्पन्न करते है उनविकार युक्त अन्न जलादिके उपयोग होनेसे नाना-प्रकारके रोगोका अथवा महामारीका प्रादुर्भाव होता है ॥ १ ॥ और कभी २ ऋतु आदिके विकारके विना कृत्या पिशाच और राक्षसोके क्रोध अथवा अधर्मके

(वाक्य३) विपौपधीत्यादि विपाणा औपधीना च पुष्पाणि तेषागंधेन (इतिनि स) अन्येतु विपौपधिपुष्पगधेन वायुना तथाच विषौषधि पुष्पगधेन उपनीतेन यो देश आक्रम्यते इतिव्याख्यानयंति ।

कारणसे देशमे भयंकर रोग पैदा होते हैं ॥२॥ अथवा स्थावर जंगम विष औषध और कुपुष्पोकी गंध युक्त वायुसे या और प्रकारसे देशमे इनका संपर्क होनेसे मनुष्यसमूह खासी श्वास वमन जुखाम शिरका दर्द और ज्वर तथा गंधाज्ञान भ्रम मसूरिका आदि भयंकर रोगोसे पीडित होते है–अथवा कुग्रह शनैश्वर केतु आदिकी दृष्टि तथा खोटे नक्षत्रो (ताराओ) के प्रभावसे भी ऐसी व्याधियाँ होजाती है--

और ऐसो सामूहिक व्याधियां देव वलप्रवृत्त हुवा करतीहै ॥

इसपरवादानुवाद ।

ऊपर जो महामारियोके कारण लिख है वे अनेक है और उनसे अनेक भातिकी महामारिया होती है अव हमको इनमेसे यह निश्चय करना है कि इस समयकी प्रचलित महामारीका मुख्य कारण उपरोक्त कारणोंमेसे कोनसाहै--तथा इसके लक्षण और उपाय आदि क्या है–

हरेक व्याधिके निश्चय करनेमे सबसे पहले इन वातोको विचारना चाहिये कि यह व्याधि कायिक है या आगंतुक--कायिकके कारण हरेक मनुष्यके शरीरहीमें प्राय' हुवा करते है और आगंतुकके कारण वाहरसे शरीरमे प्रविष्ट हुवा करते है अर्थात् चोट

आदि लगनेसे अतिशीत उष्ण दूपित जल वायु अग्नि धूप कृमि कीट सर्प विच्छू मूपक लूतादिका विप इत्यादि बहिर्भव कारणोसे शारीरक रक्तमांसादिमे विकार होने पर रोगका प्रादुर्भाव होवे वही आगतुक कहलाताहै ॥

इनमेसे कायिक रोग प्राय: सामूहिक नही होते किंतु बहुधा आगंतुक रोगही जो अयोग्य जल वायुसे या सामूहिक खाना पान आदिमे दूपण होनेसे या सविप कृमि कीट मूपक लूतादिकी वृद्धि होकर तज्जन्य विपका सपर्क जनसमूहमे फैलनेसे होते है वेही सामूहिक रोग महामारी होतेहै ॥

जब पूर्वोक्त प्रमाणोसे यह निश्चय होताहै कि सामूहिक रोगोके कारण प्राय· आगतुकही विशेप होतेहै तब हमे विचारना चाहिये इस व्याधिमे कौनसा आगंतुक कारण संभव होताहै ॥

इसमे हमको यहभी देखना चाहिये कि इस रोगमे शरीरकी कौनसी धातु या कौनसे अवयवमे विकारका प्रादुर्भाव होता है जिससे रोगके निदान और चिकित्सादि ठीक २ निश्चय होसके ॥

अब जो वर्त्तमान महामारीके लक्षणोकी तरफ बहुत विचार करनेसे विदित होता है तो यही होता है कि इस भयंकर व्याधिके कारणरूप विपका दुष्प्रभाव रुधिरमे होता है ॥

हमको अब उपरोक्त जनपदोद्धंसनीय व्याधियोके कारणोमे देखना चाहिये कि इसलिये किस प्रकारका विष है जो इतने तीक्ष्ण रूपसे रुधिरमे किस प्रकार से प्रविष्ट होता है॥

वैद्यकके सिद्धांतोके अनुसार मुख्यतासे विष दोही प्रकारका होता है एक स्थावर दूसरे जगम। स्थावर उस प्रकारके विषोको कहते है जो स्थिर रूपसे रहे जैसे धातु संबंधी खानसे निकलने वाले तथा वानस्पत्य (वनस्पतियोके अंग प्रत्यंगसे पैदा हो) और जंगम जांतविक विषको कहते है जो सर्प बिच्छू मूषक कृमि लूता आदि जीवोसे उत्पन्न होवे॥

यदि सामूहिक खान पानमे किसी प्रकारके विष-का सपर्क हो तो उसका प्रभाव पहले प्रायः मेदे (आमाशय अर्थात् सूमक) पर होना चाहिये और यदि वायुमे मिला हो तो उसका प्रभाव फेफडों या दिमागमे कुछ प्रतीत होना चाहिये परन्तु इस महामारी (प्लेग) मे दोनो नही किन्तु इसमे रुधिर-मे दुष्प्रभाव होनेसे ग्रंथि ज्वर आदि होते है अब इन लक्षणोसे स्पष्ट होता है कि विषके स्थूल अणु बाहर स्पर्श होनेसे रोम छिद्रों द्वारा रुधिरमे प्रविष्ट होकर उसे दूषित कर देते है जिससे ज्वर ग्रंथि आदि शोणितदुष्टताजन्य उपाधियां उत्पन्न होती

है और इस व्याधिमे जंगम (जांतविक) विषका दुष्प्रभाव प्रतीत होता है ॥

किसी वैद्यने इसे अग्निरोहिणी फुन्सी समझा कोई इसे विदारिका कहने लगे कोई ग्रंथि और कोई विद्रधीही कहते है इत्यादि ऐसे २ विचार कई प्रकारके किये परन्तु इस महामारीके हेतु और संप्राप्ति तथा पूर्ण लक्षण एवं समूहमे फैलनेकी युक्ति उपरोक्त किसीमे नही पाई जाती और न शास्त्रक प्रमाणही मिलता है ॥

हमने जो इसे जांतविक विषके दुष्प्रभावसे निश्चय किया है वह शास्त्रोक्त और यौक्तिक प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध होता है ॥

कई साधारण बुद्धिके मनुष्य इसमे यह शंक करे कि जीव जतुका विष विना काटे कैसे चढ़ सकता है और इस रोगके आदिमें कोई जीव काटता हुआ किसीको मालूम नही हुआ ॥

इसका उत्तर यह है कि प्रथम तो बहुत प्रकारके अति मूक्ष्म कीड़े ऐसे होते हे जो रोममार्गादि द्वारा शारीरक रुधिरमे प्रविष्ट होजावे और प्रविष्ट होते समय मालूम क्या ख्यालतक भी नही होता और रुधिरमें पहुच कर अनेक उपाधियां पैदा करते है दूसरे यह कि कई ऐसे विषवाले जीव होते है जिनक

शारीरिक विप त्वचामें स्पर्श होनेसेही दुष्प्रभाव उत्पन्न करता है जैसे लूताके विपहीको देखलीजिये स्पर्श होते समय मालूम तक नहीं होता और फिर कैसा उपाधिकारक होता है॥

जांतविक विप कुछ एक काटनेहीसे नही चढ़ता है जंगम (जीव जंतुवोके) विपके १६ अधिष्ठान है देखो श्रीधन्वंतरिप्रणीत सुश्रुतसंहिता॥

इस महामारीका हेतु।

तत्र दृष्टिनिश्वासदंष्ट्रानखमूत्रपुरीपशुक्र लालार्तवमुखसंदंशविशर्द्धितगुदास्थिपि त्तशूकशवानीति॥

जंगम विपके ये १६ अधिष्ठान है दृष्टि श्वास डाढ नख मूत्र विष्ठा शुक्र लार आर्तव मुखसंदंश विशर्द्धित (अधो वायु) गुदा आपित्त शूक (काटा या डक) तथा शव (मृतशरीर) अर्थात् किसी जंतुकी दृष्टिमें किसीके श्वासमे किसीकी डाढमे किसीके मूत्रमें किसीकी विष्ठा में किसीके शुक्रमे किसीकी लारमे विप होता है इत्यादि और किसी किसी के एकसे अधिक स्थानोमे विप हुवाकरता है॥

यह बात हम पहले कह चुकेहै कि बाहर स्पर्श होकर दुष्प्रभावकरनेवाले स्थूल विपयके ..

इस व्याधिका मुख्य कारण है—अस्तु लूताओं तथा सविप मूपकोंका शारीरिक विप बाहर स्पर्शमात्रसे शरीरमें प्रविष्ट होकर रुधिरको दूपित करके इस प्रकारकी भयंकर व्याधियां उत्पन्न करताहै ॥

परंच प्रचलित महामारीके लक्षण और हेतु तथा संप्राप्तिकी तरफ परिपूर्ण विचार करनेसे यही सिद्ध होताहै कि यह मौपिक विपकाही दुष्प्रभावहै और जहरीले मूपकोका प्रादुर्भाव होना जनपदोद्ध्वंसनीय रोगो (महामारी) के कारणोमे पहले वर्णन होही चुकाहै ॥

सविष मूपकोकी जाति और उनके विपके स्पर्श-से घोर व्याधि और उसके उपद्रव आदिके विष-यमे हमारे आयुर्वेदमे इस प्रकार लिखाहै देखो सुश्रु-तसंहिता ॥

मूपिकाः शुक्र विपाः लूताश्च लालामूत्र-पुरीपमुखसदंशनखशुक्रार्तवविपाः ॥

विपैल मूपकोंके शुक्र (वीर्य) मे विप होताहै और लूताओंकी राल मूत्र पुरीष मुख संदंश नख शुक्र और आर्तव (रज) मे विप होताहै ॥

१ लूता एक प्रकार का कृमि होताहै जिसे भाषामे मकडी कहते है वे कई प्रकार की होतीहै और अति सूक्ष्म राईके दानेसे लेकर काकके अंडेतक वल्कि २ इंचतककी होती है इसमे वृद्ध वाग्भट्ट यो लिखतेहै "ग्यास दष्ट्रा शकृन्मूत्र शुक्रलालानखार्तवै । अष्टाभिरुद्धमत्येता विषव क्रैर्विशेपत "॥

विषयुक्त मूषकोंके भेद और जाति।

पूर्वमुक्ताः शुक्रविषामूषिकायेसमासतः।
नामलक्षणभैषज्यैरष्टादश निबोधतान्॥

पहले जो शुक्रविषप्रधान मूषक संक्षेपसे कहे अब उनके नाम लक्षण और उपाय श्रवण करो विषयुक्त मूषक १८ प्रकारके होतेहै (घरोके साधारण मूषक प्रायः विषैल नही होते) और जो १८ प्रकार के विषयुक्त होते है उनके नाम आदि हम अगाडी लिखते है॥

लालनः पुत्रकः कृष्णो हंसिरश्चिकिरस्तथा। छछुंदरोऽलसश्चैवकषायदशनोपिच॥ १॥ कुलिंगश्चाजितश्चैव चपलः कपिलस्तथा। कोकिलो रुणसंज्ञश्च महा कृष्णस्तथोंदुरः॥ २॥ श्वेतेन महतासार्द्ध कपिलेनाखुनातथा। मूषिकश्चकपोताभस्तथैवाष्टादशस्मृताः॥ ३॥

(१।२।३) यद्यपि विषयुक्त मूषक १८ प्रकारके जैसे ऊपर लिखेहैं वैही होतेहै परतु उन सविष मूषकोंका घरोंके साधारण निर्विष मूषकोसे सयोग होनेपर उनकी दोगली सतान पैदाहो और उनमे भी विषके अश उत्पन्न होवे ऐसा नहो, और यदि दैववश ऐसा हो तो बडे विचार की बातहै॥

अठारह प्रकारके विषयुक्त मूषक इस भांति होतेहैं लालन पुत्रक कृष्णमूषक हंसिर चिक्किर छछूंदर अलस कषायदशन ॥ १ ॥ कुलिंग अजित चपल कपिल कोकिल अरुण और महाकृष्ण ॥ २ ॥ महाश्वेत और महाकपिल तथा कपोताभ (इस प्रकारसे १८ प्रकार के विषैल मूषक होतेहै और इन्हीनामोसे इनकी आकृति रंग आदि भी जाना जासकताहै) ॥

संप्राप्ति।

अर्थात् सविष मूषकोंका विष शरीरमें कैसे प्रविष्ट होताहे।

शुक्रंपतति यत्रैषां शुक्रघृष्टैः स्पृशंतिवा। नखदंतादिभिस्तस्मिन् गात्रेरक्तं प्रदुष्यति ॥

इति सुश्रुत।

जहां इन विषैल चूहोका वीर्य गिरे अथवा शुक्रसे लिये या घिसे हुवे पदार्थोंसे या नख दंतादिसे स्पर्श होजावे तो उसी शरीरमें रुधिर दूषित होजाताहै ॥

इस पर डल्हनाचार्य टीकाकार यों लिखते हैं कि—

नखदंतादिभिरित्यादि शब्दात् पुरीष मूत्राभ्यांच तथा वालवायनं शुक्रेणाथ पुरीषेण नखैस्तथा दंष्ट्राभिर्वा पठंतीह

मूपिकाणां पंचविपमिति कस्मिंश्चित्तं-त्रांतरे विशेपोस्ति ॥

ऊपरके श्लोकमे जो "नखदंतादिभिः" कहाहै इसमे आदिशब्दसे विपैल मूपकोंके पुरीप (मेगनी) और मूत्रसे भी विप जानना मूपकोंके पाच विपयुक्त होतेहैं शुक्र विष्ठा नख दांत और मूत्र ऐसा किसी तंत्रातरमे विशेपहै इन पांचोके स्पर्श आदिसे विपका प्रवेश शरीरमे होकर रुधिर विगडजाताहै और ग्रंथिज्वर आदि दारुण व्याधि होजाती है ॥

महामारीके लक्षण

(देखो सुश्रुत)

जायंते ग्रथयः शोफाः कर्णिका मंडला-निच।पिडिकोपचयश्चोग्रा विसर्पाः किट-भानिच ॥ १ ॥ पर्वभेदोरुजस्तीव्रा ज्व-रोमूर्च्छाचदारुणा।दौर्वल्यमरुचिःश्वासो वेपथुर्लोमहर्पणम् ॥ २ ॥ (ज्वरोत्रसान्नि-पातिकः)

शरीरमे मूपकविपके प्रविष्ट होनेसे रुधिर दूपित होकर फिर उससे गाठ उत्पन्न होती है शोथ होजाताहै कर्णिक और मंडल (चकत्ते) भी होजाते है अथवा

उग्रपिडका (फुन्सी) तथा विसर्प और किटभी भी होना संभवहै और संधियोंमें भेदन तीव्रपीडा तथा ज्वर और दारुण मूर्च्छा दौर्बल्य अरुचि श्वास कंप और रोमहर्ष येभी होजातेहै (इसमें ज्वर सन्निपातका प्रायः होताहै ॥

वाग्भट्ट मे इसकी सम्प्राप्ति और लक्षण इस प्रकार लिखेहै।

शुक्र पतति यत्रैषां शुक्रदिग्धैः स्पृशतिवा। यदंगमंगैस्तत्रास्ते दूषिते पांडुतां गते॥१॥ ग्रंथयः श्वयथुः कोथो मंडलानिभ्रमो-रुचिः।शीतज्वरोतिरुक्सादो वेपथुः पर्व-भेदनम् ॥ २ ॥ रोमहर्षः स्रुतिर्मूर्च्छा दीर्घ कालानुबंधनम् ॥ श्लेष्मानुबद्धबह्वाखुपो तकच्छर्दनं सतृट् ॥ ३ ॥

जहाँ इन विषैल मूपकोका शुक्र गिरे या शुक्रसे लिपे या सने हुवे अंगो या पदार्थोंसे स्पर्श होजावे तौ उस शरीरमें रुधिर दूषित होकर पांडुता (सुपेदी लिये पीलापन) को प्राप्त होजाताहै फिर उससे ग्रंथि उत्पन्न होजातीहै शोथ होताहै कोथ(ग्रंथि फूटना या सडना) तथा मंडल भ्रम और अरुचि होना शीतज्वर होना अतिपीडा और थकान कंप और संधियोमे भेदन होना रोमहर्ष तथा (ग्रंथिफूटकर बहना)मूर्च्छा

वे होशी) होना और वहुत समयका अनुबंध होना लक्षण होते है तथा कफसे लिपटे हुवे कृमि वमनमे निकलते है जो सूक्ष्म निरीक्षणयंत्र(खुर्दवीन) से खनेपर अतिसूक्ष्म चूहे छछूंदरकासा आकार ालूम होताहै और तृषाभी होतीहै ॥

(दीर्घकालानुवधनका यह अभिप्राय है शरीरमे विष्ट हुवा विष काल और कारण पाकर कुपित ोता है) ॥

इसमें कीडेभी होते हैं ॥

ऊपर लिखा जाचुकाहै कि " श्लेष्मानुवद्धवह्वाखु- ोतकच्छर्दन" इस व्याधिमे वमनमे अतिसूक्ष्म चूहेके ाकारके कृमि पायेजाते है और इस व्याधिकी संप्रा- ते पहले रुधिरमें होती है इससे रोगीके रुधिरमे अवश्य कृमि होते है जो आमाशयमे पहुँचकर वमनमे आते है और जव रुधिरमे कृमि होते है तौ ग्रथिमेअवश्य- मेव कृमियोका होना संभव होताहै ॥

मूषकोंका विष ठेरकर कुपित होता है (देखोचरक)

आदंशाच्छोणितंपांडु मंडलानिज्वरोरुचि। लोमहर्षश्चदाहश्चाप्याखुदूषीविषार्दिते॥

मूषकोका विष शरीरमे व्याप्त हुवा स्थित हो उसके ये लक्षण है कि दंश (विषस्पर्श) की जगहके

आस पास रुधिर पांडुवर्ण होजावे चकत्ते मालूम हों
भी संभवहै ज्वरहो अरुचि हो रोम हर्ष हो तथा दा
होवे ॥

इसके कोप हेनेका समय और कारण ।

वातपित्तोत्तराः कीटाः श्लेष्मिकाः कण-
भोंदुराः (वाग्भटः)

कीडे प्रायः वातपित्तप्रधान होते हे और कणभ
तथा मूपक कफप्रधान होते है (अर्थात् प्रायः कीडे
का विप वातपित्त प्रधान होता हे और जहरीले
मूपकोका विप कफप्रधान होता है ॥

मूपिकानां विपप्रायःकुप्यत्यभ्रेपुनिर्हतम्
(सुश्रुतः)॥ यथायथंवा कालेपु दोपाणां
वृद्धिहेतुपु–(वाग्भटः) ॥

शरीरमें व्याप्तहुवा मूपकविप अभ्रके दिनोमे
प्रायः कुपित होताहै ऐसा सुश्रुत लिखते है (इसमे जो
प्रायः शब्द है उससे अगाडीका लिखा हुवा वाग्भट्ट-
का मतभी सिद्ध होताहै) वाग्भट्ट लिखते है अथवा
दोपोकी वृद्धिके हेतुके अनुकूल यथायोग्य कालमे
इसका कोप होता है ॥

ऊपर हम यह लिख चुके है कि जहरीले चूहो-
का विप कफप्रधान होता है इससे कफके संचय

और कोपके समय यह विप कुपित होता है कफके संचयका समय हेमंत ऋतु अर्थात् सरदी है और कोपका समय वसंत है तौ इन वाक्योंका तात्पर्य यह हुआ कि वर्पासे वसंततक प्रायः इसका यथा कोप होना संभव है [प्रयोजन यह कि वर्पाऋतु से लेकर सरदी और वसंतऋतुतक कारणके अनुसार इस व्याधिके कोप (जोश) का समय होता है और ग्रीष्मऋतु (गरमी) मे प्रायः कमी होता है] ॥

दूपी विपकी निरुक्ति और कोपके कारण।

प्राग्वाताजीर्णशीताभ्रदिवास्वप्नाहिताशनैः ॥ दुष्टंदूपयतेधातूनतोदूपीविपंस्मृतम् ॥

मूपकोका विप दूपी विप होता है अर्थात् कारण पाकर कुपित होता है (जोशमे आता है) यह पहले लिखा जा चुका है वह इन कारणो से कुपित होता है (अर्थात् जोशमे आता है पूर्व की हवा अजीर्ण शीत काल या सरदी लगना अभ्र (वर्पा के दिन) दिनका सोना अहित भोजन इन कारणो से दूपित (कुपित) होकर रक्तादि धातुवोको दूपित करताहै (उनमें विगाड करताहै) इसीसे शरीरमे ठैराहुवा कुपित होनेवाला विप दूपी कहलाताहै ॥

इसकी असाध्य अवस्था ।

मूर्च्छांगशोथवैवर्ण्यक्लेदशब्दाश्रुतिज्वराः॥
शिरोगुरुत्वलालास्रक् छर्दिश्चासाध्यमूपिकैः ॥

असाध्य मूपिकविप के ये लक्षणहैं कि मूर्च्छा अंग शोथ वर्ण विगडजाना क्लेद बहरापन ज्वर शिरका भारी होना लार वहना और रुधिरकी वमन होना (अंगशोथसे अभिप्राय यहां मूपिकाकार ग्रंथिसेहै क्योंकि इसी श्लोकोक्त अंगशोथ शब्द पर भावमिश्रजी अपने ग्रंथ भावप्रकाशमे यों टिप्पणी करतेहै कि "अंगशोथोत्र मूपिकाकारो बोद्धव्यइतितंत्रांतरे" अर्थात् चूहीके आकार ग्रंथिरूप होना ही शोथ जानना) इस से प्रयोजन यह कि मूर्च्छा बेहोश और ग्रंथि (जो मूपिकाकार हो) और शरीरका वर्ण विगड जावे और क्लेद हो सुनाई न दे अर्थात् बहरापन होजावे दारुण ज्वर हो शिर भारी होजावे और रुधिरकी वमन होवे इतने लक्षण सव परिपूर्ण होनेपर इसकी असाध्यता समझ लेनी चाहिये और अल्पलक्षण होनेसे कष्टसाध्यता ॥

अब उपरोक्त लिखितप्रमाणो से सिद्ध होगया कि यह महामारी अवश्य मौपिकविपजन्या है इससे इसका नाम "मौपिकमहामारी" कहा जाना ठीकहै ॥

इसपर प्रत्यक्ष प्रमाण ॥

जहां जहां यह महामारी हुई या होती है वहांपर विचित्र मूषक दिखाई देतेहै या उनके शव (मृतशरीर) पाये जाते है इससे कई अनुभवी विद्वानोको इस वातका विचार भी हुवा कि कदाचित् इस रोगके कारण ये मूषक ही हो (कितु कई जगह ये मूषक वहुतसे इसी विचार से मरवाये भी गये) परंतु अव-तक इस पर शास्त्रीय आश्रय नही मिलाथा जिससे यह वात संदेहमेही पडीरही दृढ रूपसे निश्चय नही हुई थी अव जोकि इस पर इसदेशके सनातन आयु-र्वेद विद्याके प्रामाणिक वृहद्ग्रंथो का पुष्ट प्रमाण होनेसे नि.संदेह निश्चय होगया कि यह अवश्यमेव "मौषिक महामारी" है ॥

इसके फैलनेका कारण ।

जैसे धीरे धीरे मूषक संतानका एक ग्रामसे दूसरे ग्रामांतरमे प्रसरण होताहै उसीके अनुसार यह भी धीरे धीरे निकटस्थ ग्रामांतरमे एकसे दूसरेमे गमन करती है ॥

और दूर देशो मे इसका प्रसरण इस प्रकार होना प्रतीत होता है कि जहां ये विषयुक्त मूषक संतान विशेष होती है (और महामारी होती है) वहांसे

कोई अधिक माल या असबाबके बड़े बड़े बोरे या गट्ठे या बक्स इस प्रकारकी असावधानी से लेजाये जावें कि उनमे कुछ विषैल मूपक हो तो उन ग्रामों या देशोमे उनके पहुंचने पर उनके विषके संसर्ग से कई एक रोगी दिखाई देवे और यदि कुभाग्यवश वहां उनकी संतान फैलकर वृद्धि हो तो उसके अनुसार अल्प या भयंकर महामारी फैलजावे अथवा दैवयोगसे वहां भी इनकी उत्पत्ति होजावे ॥

और शुद्ध स्थानोमे कभी इस व्याधिका एकाध रोगी देखे जानेका यह कारण पाया जाता है कि महामारी समाक्रांत स्थानसे आये हुये किसी मनुष्यके किसी वस्त्रादिका कोई भाग विषैल मूपक के शुक्रादिसे लिप्त हो और वहां उस विषलिप्त वस्त्रादिका किसीके अंग से स्पर्श होजावे ॥

इसके उपाय ।

सबसे पहले मनुष्योंको ऐसे भयंकर अवसरो पर छल कपट द्रोह अहंकार अधर्म आदि छोड़कर उस सर्व शक्तिमान् परमेश्वरका ध्यान करना चाहिये और दारुण आपत्तिसे रक्षित रखनेकी उसीसे प्रार्थना करनी चाहिये क्योंकि मनुष्यकी क्या सामर्थ्य है कि

उसकी इच्छाके विना कोई काम कर सकें और उसमें कृतकार्य हो ॥

और यह भी उस परम दयालु जगदीश्वरसे भरोसा रक्खे कि जैसे प्रजापर कोपदृष्टि करके जिस प्रकारसे वह ऐसे भयंकर रोगोंके कारण (सविषवन वृक्षादि या जीवजंतु आदि) देशमे उत्पन्न करता है उसी प्रकार जिस समय उसकी कृपादृष्टि होती है तव क्षणमात्रमे सबको नष्ट कर देता है इससे सदा सर्वदा उसी दयासागर परमेश्वरसे यह प्रार्थना करे कि हे कृपानाथ अपनी दीनप्रजाकी रक्षा करो ॥

इसके सिवाय ऐसे समयमें दान जप हवन पूजन आदिभी सबको अपने मतके अनुसार करने चाहिये जो इस लोक और परलोक दोनोंमें सुखसाधनका हेतु है ॥

यद्यपि जो कुछ होता है सभी कुछ ईश्वरकी इच्छासे होता है परन्तु ईश्वरने जव हमे ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय तथा सत् असत् जाननेको वुद्धि इसी लिये प्रदान करी है और आयुर्वेदका प्रादुर्भाव किया है कि मनुष्य जिससे अपने वचावका यथाशक्ति प्रयत्न करे तौ फिर हमे भी उस ईश्वरके भरोसे पर

अपने बचावके लिये यावद्बुद्धिबलोदय अपनी शक्ति के अनुसार यत्न करने चाहिये ॥

इस व्याधिसे रक्षित रहनेके नियम ॥

(१) ऐसे समयमें अपने स्थानो को बहुत साफ रखना मकानमें कही बिल छेद दराड आदि जरासी भी न रहने देना यदि होतो सबको खूब बंध करके लिप वा देना—और मोरी आदिमे बारीक जाली लगा देना॥

(२) स्थानों के अंदर या आसपास मैला कीचड कूडा नमी आदि नहीं रखना ॥

(३) सामान कपडे लत्ते आदि जो गैर मामूली हो उन्हे अच्छे संदूखोमे बंध कराके मेजो या तिपाइ-यों पर अधर रख छोडना और जो बरतावमें आनेके मामूली कपडे लत्ते आदि हों उन्हे बहुत सावधानीसे बंध अलमारियोंमें या जहां ऐसे जीवोंका या उनके मल मूत्रादिका संसर्ग कदापि न होसके ऐसी जगह रखना ॥

(४) खानेपीनेके सामानको भी ऐसेही रक्षित जगह पर रखना जहां ऐसे जीवों और उनके मलमू-त्रादिका संपर्क न हो ॥

(५) बहुतसे बारदाने और असबाब के मकानों

मे न जाना और वहांका सामान भी यथा संभव काम मे नही लाना ॥

(६) दूसरे मनुष्यो के मैले अस्वच्छ वस्त्रों आदिसे अपना शरीर न रगडना तथा अस्वच्छ या समाक्रांत मनुष्यो से संसर्ग न करना ॥

(७) नित्य साफ धुले हुये वस्त्र पहरना और भोजनादिकी सामग्रीको भी वहुत शोधन करके काममे लाना ॥

(८) कभी २ मकानो को साफ पानी या विप नाशक औषधोके जलसे धुला देना और फिर आग जलाकर खूब सुखाकर गरम करलेना और विपनाशक द्रव्योकी धूप देना ॥

(९) नित्य शुद्ध जलसे स्नान करना और दूसरे चौथे दिन किसी विपनाशक औषध के जलसे न्हाडालना ॥

(१०) ऐसे दिनोमे पूर्वकी पवन सरदी अजीर्ण कारक भोजन दिन का सोना अवरमे फिरना आदि वातोसे वचारहना ॥

(११) इस के विप नाशक अगदोमे से किसी साधारण औषध का उपयोग रखना ॥

सामुहिक उपाय ।
(देश ग्राम और मोहल्ले आदिके शुद्ध और निर्विप करने के लिये प्रयत्न—ऋपभागद का उपयोग)

यस्यागदोयंसुकृतोगृहेस्यान्नाम्नर्षभोनामनरर्पभस्य ॥ नतत्रसर्पाःकुतएवकीटास्त्यजंतिवीर्याणिविपाणिचैव॥१॥ एतेन भेर्यः पटहाश्चदिग्धानानद्यमानाविषमाशुहन्युः । दिग्धापताकाश्चनिरीक्ष्यसद्योविपाभिभूताह्यविपाभवंति ॥ २ ॥

(इतिसुश्रुत.)

श्रीधन्वतरिजी सुश्रुत संहितामे लिखतेहै कि इस "ऋपभागद"[1] नामक औपध यथोक्त रीतिसे संपादन करके इससे भेरी तथा ढोल नगारे आदि बाजे लेपित करके उन्हे बजावे (अर्थात् जिस देश या ग्राम या

---

१ ऋपभागद नाम औपध क्या है और कैसे सपादन होतीहै यह जाननेके लिये देखो सुश्रुत सहिता की सा वय टीका हमारी बनाई हुई जो श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस बबई मे छपीहै (इसके अगदतन्त्रमे इसकी विधि विस्तारपूर्वक लिखीहै) ॥

मोहल्ले आदिमे ऐसे विषजन्या महामारी हो वहां
नजा॰ हुवे निकले एक तरफ से दूसरी तरफ को
बजाते हुवे गमन कियाकरे) इनके शब्दसे विषका
प्रभाव नष्ट होजाताहै तथा इसी औषध से लेपित
किये वस्त्र झंडियोपर चढा २ कर जहांतहां लगाई
जावे जिनके देखनेसे (अथवा वायुद्वारा उस औषध
के परमाणु पहुंचनेपर) सब प्रकार के विषजन्य
व्याधिसे पीडित जनसमूह निर्विष होजाते है--जिसके
स्थानमे यह ऋषभागद नाम औषध रीतिपूर्वक तयार
किया हुवा उपस्थित होताहै वहां सर्प भी नही रहते
कीटो (कीडे बिच्छू मूषक लूता आदिकी तो क्या
सामर्थ्य है) और यदि निकल नही सके तो वीर्य और
विष सबका नष्ट होजाताहै ॥

(वक्तव्य) देश शुद्धिके लिये गांव गांवमे जहां
विषके प्रभावसे महामारी हो वहां वहां इस औषधसे
लेपन करके बहुतसी झंडियां लगाई जावे और इसी
औषधसे लिपे बाजे बजाये जावे ॥

ग्राम शुद्धिके लिये बहुत जगह वायुके रुखपर
इसी औषधसे लिपी झडियां लगाई जावे और इसी
औषध लिप्त बाजे बजाये जायाकरे ॥

घरकी शुद्धिके लिये मकानके हरेक कमरे व कोठे आदिमे इसकी पोटलियां लटकाई जावे व सुपेदीमे मिलाकर पोतीजावै या मिट्टीमे मिलादे ॥

महामारीपीडित रोगीकी चिकित्सा ।

चिकित्सा आरंभकरनेमे सबसे पहले रोगीके रोग का पूर्णतया निदान और उसके उपद्रव व्याधिक बलाबल रोगीकी अवस्था और प्रकृति बल तथ समय और देश इत्यादि सब बातोका विचार करन चाहिये ॥

और यह बात सिद्धही है कि इस व्याधिमे जान्त विक (मूपक) विपका दुष्प्रभाव होता है और वह दुष्प्रभाव रुधिरमे प्रविष्ट होकर उपद्रव करताहै इस लिये सबसे पहले रुधिरका विस्रावण तथा शोधन करना चाहिये और रक्त शोधनी औपधे ऐसी होनी चाहिये जो इस विपके नाश करनेवाली भी हो- और दंश (विपयुक्त स्थान को जहां रक्त दूपित होकर ग्रंथि कर्णिकादि हो) अग्निसे दग्ध करना या पछने लगाकर या चीरकर दूपित रक्तादि निचोड डालना और फिर शिरीपादि लेप कर देना (१)

---

१ शिराश्च स्रावयेत्प्राज्ञ कुर्यात्संशोधनानिच । सर्वेपाचविधि कार्यो मूपिकानां विपेष्वथ। दग्ध्वाविस्रावयेद्दंश मच्छितचप्रलेपयेत्। शिरीपर- जनी कुष्ट कुङ्कुमैरमृतायुतै ॥

और इस व्याधिके विपका प्रभाव आमाशयमें भी पहुँचताहै इस लिये यथोक्त औपधोसे वमन और विरेचन देकर(उचितहोतो)शोधन करना भी श्रेष्ठहै(१) और इसमे भ्रम तथा दारुण मूर्च्छा भी होती है इससे इसके विपका प्रभाव हृदय और मूर्द्धापर बहुत विशेष होताहै इसवास्ते हृदयके लिये हृद्य और विप नाशक उपयोग करने और मूर्द्धा (दिमाग़) के लिये यथोचित शास्त्रोक्त नस्य और अंजनादि उपयोगकरने चाहिये ॥ (२)

इसबातको तौ सभी डाक्टर और यूनानी हकीम तथा देशी वैद्य एकस्वर होकर मानतेही है कि

---

(१) छर्दन जालिनी क्राथै शुकाख्याकोटयोरपि। शुकाख्याकोशव त्योश्च मूल मदन एवच। देवदाली फल चैव दभ्रापीत्वाविषवमेत्। फल वचादेवदाली कुष्ट गोमूत्र पेपित। पूर्वकल्पेन योज्या स्यु सर्वोंदुरु विषच्छिद । विरेचने त्वृद्दती त्रिफला कल्क इप्यते- (इति सुश्रुते)

२ सिदुवारस्य मूलानि विडालास्थिनत विप। जलपिष्टो गदोहतिनस्या घैराखुजविष ॥ वशत्वगार्द्री मल्क कपित्थ कटुत्रिक हेमवतीसकुष्टा। करज बीज तगर शिरीप पुष्पन्च गोपित्तयुतानिहति। विषाणिलूतादुरुप नगाना कैटचलेपाजननस्ययोगै ॥ शिरोविरेचनेसार शिरीपफल मेवच ॥ कटुत्रिकाग्यश्चहितो गोमयस्वरसांजने- (वृद्ध वाग्भटे सुश्रुतेच)

कुष्टत्रिकटुक दार्वी मधुक लवणद्वय ॥ मालती नागपुष्पन्च सर्वाणि मधुराणित्र॥ कपित्थरसपिष्टेय शकराक्षौद्र सयुत ॥विपहृत्यगद स्व मूपिकाणा विशेपत - (इति सुश्रुत)

अर्कस्यदुग्धेन शिरीषबी ज त्रिभावित पिप्पलिचूर्णमिश्रम्।एषोगदोहति विषाणिकीटभुजगलूतादुरु वृश्चिकानाम् ॥ (इति वाग्भट)

इसमे किसीप्रकारके विपका प्रभाव अवश्यमेव है चाहो अभीतक किसीको दृढ रूपसे यह निश्चय नहुवा हो कि किसप्रकारका विप है परंतु विपका होना और विपके सम्मति प्रभाव दूर करनेके यत्न करनेकी सबकी बराबर है अब जोकि अपने देशके सनातन आयुर्वेद विद्या (वैद्यक) के बडेबडे प्रामाणिक ग्रंथोके अनुसार मूपिक विपके प्रभावसे इसका होना सिद्ध होगया और उसके लक्षण और संप्राप्ति आदि सब बराबर मिलते है और प्रत्यक्ष देखनेमे भी वह हेतु मौजूदहै इससे उस विपका प्रभाव नष्ट करनेके लिये कुष्टादि अगद तथा अर्क दुग्ध भावित शिरीपबीजादि अगद का उपयोग करना (औपधखिलानेके तौरपर करना) श्रेष्ठ है ॥

दोपोंकी प्रधानता ।

यह व्याधि साधारण रूपसे कफप्रधान होती है और शीतकाल शीतल आहार विहार वर्पा अजीर्ण इत्यादि कारणोसे कुपित होती है (अर्थात् जोर पकड़ती जोशमे आती है) इस लिये बहुधा ठंडी औपध और शीतल आहार विहार उचित नहीं परन्तु हां कोई विशेप कारण से पैत्तिक उपद्रव हो तो

ाई यथायोग्य उसकी शांतिके लिये शीतल उप-
ार करना भी योग्य है॥

यद्यपि यह व्याधि साधारण रूपसे कफ प्रधान है
ारतु विशेप कर मूपको की जाति भेदके कारण से
अथवा देशकाल प्रकृति आहार विहारादि के अन्तर
े इसमे अन्य दोपो (वात पित्त रक्त और सन्निपात
ाभी) का उद्रेक और प्रधानत्व होना संभव है तथा
उपद्रव भी उनमे से प्रधान दोपके अनुसार होते है
ऐसा विचार कर यदि अन्य कोई दोप उल्नण हो
अथवा कोई विशेप उपद्रव हो तो उसकी भी शाति
यथा योग्य करनी चाहिये॥

विपैल मूपक सामान्यभावसे श्लैष्मिक होते हैं
परंच इन विपैल मूपको मे भी कई जातिके अन्य
दोपोको कुपित करने वाले होते है॥

**अरुणेनानिलः क्रुद्धो वातजान् कुरुतेगदा
न्। महाकृष्णेनपित्तंच श्वेतेनकफएवच।
महताकपिलेनासृक् कपोतेनचतुष्टयम्॥**

यह हम पहले लिख चुके हैं कि मूपक विपसे रक्त
दूपित होता है जिसमें अरुण मूपक के विपसे रुधिर
में वायुका दोष होकरके कुपित होता है और वात

जन्य विकार करता है इसी प्रकार महाकृष्णके वि
से पित्त कुपित होता है और महाश्वेतके विपसे क
कोप होता है तथा महाकपिलके विपसे रुधिर
कोप होता है और कपोत नामक मूपकके विपसे
चारो दोप कुपित होते हे (इससे जहां जैसे विप
जिस दोपका कोप हो और जैसे उपद्रव हो उसी
अनुसार शांतिके यत्न करने चाहिये ॥

उपद्रवोंकी न्यूनाधिकता।

इस महामारी के कारणभूत अठारह प्रकार
सविप मूपकोका वर्णन हम पहले कर आये है उन
विपसे ग्रंथि ज्वर मूर्च्छा आदि लक्षण जो पहले लि
जा चुके हे वे तो प्रायः सामान्य रूपसे होते ही
परतु उन मूपकोकी जाति भेदके कारण से (य
अन्य देशकाल प्रकृति आहार विहार आदिके कारणसे
कईयो मे कई विशेप लक्षण और कई न्यूनाधिक उप
द्रव होते है जैसे किसीमें मुंहसे पानी ज्यादा वहत
है हिचकी और वमन अधिकतासे होती है ॥ किसी
में ज्यादा थकान शरीरमें पीलापन होता है। किसी
मे चूहीके आकार की कई गांठे शरीरमे होजाती हैं।
किसीमे रुधिरकी वमन होती है । किसी मे शिरमें

दारुण वेदना आदि होते हैं किसीमें बड़ी गोल गांठ दारुण ज्वर होता है इत्यादि अनेक उपद्रव होते है इनमेसे जहां जैसे विपका प्रभाव और जैसे उपद्रव आदि हो वहां उस विपके प्रभाव और उपद्रवकी शांतिके लिये यथोक्त वैसेही यत्न करने चाहिये ॥

पथ्य ॥

जोपहले रक्षित रहने के नियमो मे दशवां नियम कहा है वह व्याधिके समय भी पथ्य समझना(अर्थात् पंखा पवन शीत अतिशीतल आहारविहार दिनका सोना गरिष्ठ भोजन इत्यादिसे बचे रहना) ॥

प्रकीर्णवातें ॥

जांतविक मृतशरीरोके कारण वायुमे दूपण होता हीहै और जीवोके मल मूत्र वीर्य आदिसे तथा उनके मृत शरीरो के कोथसे कृमि उत्पन्न होतेही है तो सविप जीवोंसे दूपित वायुमे विपकाप्रभाव होताहै और

(१) लालास्रावो लालनेन हिक्काछर्दिश्चजायते। तण्डुलीयककल्कन्तु लिह्यात्तत्र समाक्षिकम्। पुत्रकेणागसादश्च पाडुवर्णश्चजायते। चीयतेग्रथिभिश्चागमाशुशायकसन्निभै। शिरीपगुदयल्कन्तु लिह्यात्तत्रसमाक्षिकम्। कृष्णेनासृक् छर्दयति दुर्दिनेपुविशेपत। शिरीपफलकुष्ठतुपिबेदिक्षुरक भस्मना। चिकिरेण शिरोदु ख शोफोहिक्कावमी तथा। जालिनामदनाकोट कपायैर्वामयेत्तुतम्। ग्रथय कोकिलेनाग्रा ज्वरोदाहश्च दारुण। वपाभूनिलिनीक्षार्थसिद्धतत्रघृत पिबेत्। कपिलेन व्रणेकोथो ज्वरो ग्रथ्युद्गमस्तथा। क्षौद्रेण लिह्यात्त्रिफलाश्वेताचापिपुनर्नवाम्। इत्यादि (इति सुश्रुत) ॥

सविप जीवोंके मलमूत्रादि तथा उनके मृतशरीरसे जो कृमि पैदा होवें वे अवश्यमेव उनकी प्रकृति अनुसारही विपयुक्त जीवोंके मलमूत्र शुक्रादि तथा उनके मृत शरीरके कोथसे लिखी हे (१) ॥

इसलिये जहां जहां इन मूपकोंकी शंका या मृत शरीर लक्षित हों या जिनस्थानों में ऐसी महामारी हो उनस्थानों की वायुको यथोक्त विपघ्न धूनी देकर (२) और पृथ्वी को विपघ्न औपधोके जलसे धोकर अवश्यमेव शुद्धकरना चाहिये (३) ॥

जहां यह महामारी होतीहे वहां प्रायः मृत मूपकों के शरीर पाये जाते है इसका कारण यह प्रतीत हि जिनस्थानोमें इन सविप मूपको का प्रवेश औ निवास होताहै तो विशेपकर प्रथम इनका संपर्क घरोके साधारण चूहोसेही होताहै क्योकि ये उन्हीके

---

(१) सर्पाणा शुक्र विण्मूत्र शवपूत्यड सभवा । वाय्वग्न्यबु प्रकृतय कीटास्तु विविधा स्मृता । सर्वदोपप्रकृतिभिर्युक्ताश्चापरिणामत ॥ इति सुश्रुत सपाणामित्यत्र आदिशब्दो लुप्तो द्रष्टव्य इत्यनेन सर्पादीना शुक्र विण्मूत्रा शवादिभ्य अपरिणामतो वा कीटाना समत्पति इति व्याख्याकारा ॥

(२) विषघ्न धूप-लाक्षा हारिद्रातिविषा भयाब्द हरेणु कैलादल कल्क कुष्ट । प्रियगुकचाप्यनलेनिधाय धूमानिलौ चापि विशोधयेत्तु ।

(३) पृथिवी शोधनार्थ-सिंचेत्पयोभिस्तु मृदन्वितैस्त विडग पाठा कटभी जलैर्वा ।(इतिसुश्रुत) अत्र मृदन्वितैरिति वल्मीक कृष्ण मृदन्वितैरित्यर्थ ॥

विलोमे प्रायः घुसते और रहतेहै और इनके विषयुक्त मलमूत्र शुक्रादि लिप्तशरीरसे उन्हीका विशेष संसर्ग होताहै और उस विषका प्रभाव उनमे होनेसे बहुधा साधारण चूहे व्याधिग्रसित होतेहैं और हॉप हॉपकर यत्र तत्र मरजातेहे और इसके अनंतर वे विषयुक्तभी प्रायः मरतेतो है हीं ॥

यह जंतु पार्थिवहे तथा इनके मलमूत्रशुक्रादिके विषका संपर्क पृथ्वी और पार्थिवपदार्थों (सामान वस्त्रादि) से विशेष होना संभवहै और यदि विषहत या विषयुक्त मृतमूषकोके कोथसे सविष कृमि उत्पन्न हो तौ वेभी पार्थिवहीहो इसलिये इसमे पृथ्वी और पार्थिव पदार्थोंकी शुद्धिका विशेष ध्यान रखना चाहिये ॥

वक्तव्य ॥

यह पुस्तक इस व्याधिका निर्णय करनेकेलिये रचीगई है इसे बॉचकर साधारण लोगोको ऐसी भयंकर व्याधिकी चिकित्सा कदापि नही करनी चाहिये इसीविचारसे हमने चिकित्साके योग प्रायः संस्कृत टिप्पणीहीमे लिखे है चिकित्सा करना साधारण मनुष्योका कामनही है व्याधिके होनेपर(याशंकापरही) अच्छे विद्वान् वैद्य या सुज्ञ हकीम डाकटर जो चि-

कित्साके तत्वको पूर्णतया जानतेहों उन्हींसे चिकित्सा कराना चाहिये ॥

हां रक्षित रहनेके नियम सर्व साधारण मनुष्यमात्रको इस रोगकी शंकामे या जहां व्याधिका प्रादुर्भाव हो वहां अवश्य पालन करने चाहिये जिससे इसरोगसे ईश्वरचाहे तो अवश्य बचे रहेंगे ॥

निवेदन ॥

समस्त विद्वान् वैद्यो और सुज्ञ डाक्टरो हकीमो और विद्वज्जनो तथा साधारण पाठक महाशयो की सेवामे विनय पूर्वक निवेदन है कि जो कुछ मैंने इस पुस्तकमे लिखा है उसे कृपया विचारपूर्वक अवलोकनकरे–यदि ईश्वरकी दयासे यह मेरा आशय सर्व साधारणमे आदर योग्य होगा तो मै अपने परिश्रमको सफल समझूंगा और इसमे कुछ भूल हो उसे कृपा दृष्टिसे क्षमाकरे ॥

सबकाशुभचिंतक अनुचर–

पं०मुरलीधर शर्मा सं·आ· सु· फर्रुख–
नगरनिवासी
राजवैद्य सैलाना स्टेट.

विज्ञप्ति ।

हमारी अनुवादित आयुर्वेदीय पुस्तके.

(१) सुश्रुत संहिता सान्वय सटिप्पणीक सपरिशिष्ट भाषाटीका सहित ॥

(२) शरीर पुष्टिविधान शरीर हृष्टपुष्टबलिष्ट करने और रखनेकी विधि ॥

(३) डाक्टरी चिकित्सासार इसमे डाक्टरी मतसे और साथही देशी वैद्यक मतसे हरेक रोगका नाम लक्षण उपाय आदि लिखाहै–सक्षिप्तडाक्टरी निघटुभी है ॥

(४) सत्कुलाचरण इसमे शिक्षा, धर्म, कुरीतिशोधन व्यापार कृषि शिल्प गृहस्थ धर्म स्वास्थ्यरक्षा साधन आदि कई विषये है यह नये ढंगका सरस उपन्यास है ॥

(५) महामारीका विवेचन–

ये सब पुस्तके सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीके श्रीवेंकटेश्वर छापेखाने बवईमे छपी है और वहाहीसे मिलती है ॥

हमारा आरोग्यसुधाकरकार्यालय ।

स कार्यालयमे सबभातिकी देशीय औषधे शास्त्रोक्त बनी हुई ष्ठ और सस्ती मिलती है जिनमेसे कुछेक यहा लिखते है से–

(१) नयनामृत अजन (बढिया) नेत्रोके अनेक विकार ाशक दृष्टिस्थिर कर्ता तन्दुरस्ती मे लगाने से अति गुणकारी ाम १) तोला महमूल ।)

२) रतिवर्द्धन चूर्ण–इसके दशदिन सेवनसे इतना बलपुरु- ार्थ होताहै कि उसे लिख नही सकते दाम दशदिनयोग्य के) रु० महमूल पॅकिग ।=)

विज्ञप्ति।

(३ ज्वरहरीगुटी अनुपानसे सब ज्वरों को निःसदेह नष्ट क
ती है काष्ठादिहै तौभी कोनैनसे बढकर है दाम १०० गोल
का १) रु०

(४) धातुसजीवनी कस्तूरी गुटी–वीर्यबढानेवाली सर्वोप
सुस्वादु दाम ५) रु–तोले इनके सिवाय औरभी सब प्रकार
देशीय औषधे मिल्सकतीहै

(५)प्रमेह हरण चूर्ण–अनुपानसे सब प्रमेह हर्ता है दाम१०)तं
ले का १) रु०

विशेष सूचना

यदि किसी महाशयको किसी भारी रोगका निश्चय करान
हो निदान औषधादि पूछना हो हमे पूरा हाल लिखे और इ
परिश्रमकी फीसका १)रु–पत्रके साथही भेजदे हम रोग
निदान और औषधादि सब लिख भेजेगे

और यदि कोई प्रतिष्ठित महाशय किसी कठिन रोग
निदान चिकत्सादिके लिये हमारा आवाहन करना चाहे त
वहभी परस्पर पत्रव्यवहारसे निश्चय होसकता है

शुभचितक–

प०मुरलीधरशर्मा–मेनेजर आरोग्यसुधाक
फर्रुखनगर–(पजाव)
राजवैद्य रियासत सैलाना.

शरीरपुष्टिविधानकी अनुक्रमणिका।

जाहिरात।

नाम	की रु आ	ट म रु आ
५४६ अर्कप्रकाश भाषाटीका रावण कृत (इसमें सब औषधियोंके गुण व अर्क निकालनेकी क्रिया है)	१–०	०–२
५४७ ज्ञानभैषज्यमञ्जरी भाषाटीका (वैद्यक)	०–४	०–॥
५४८ मदनपालनिघटु भा टी	२–८	०–४
५४९ विषचिकित्सादर्पण	०–४	०–॥

वैद्यक भाषा।

नाम	की रु आ	ट म रु आ
५५० चिकित्साधातुसार भाषा	०–६	०–१
५५१ रसराजमहोदधिभाषा प्रथमभाग–वैद्यक यूनानी हिकमत और यूनानीदवा और फकीरोंकी जडी बूटी और सन्तोंके पुस्तकोंका सग्रह है	०–१२	०–२
५५२ रसराजमहोदधि दसराभाग(उपरोक्तसर्वोलङ्कारों समेतउपकर तय्यार है)	०–१२	०–२
५५३ अमृतसागर कोशसहित हिदुस्थानी भाषामें सर्वदेशोपकारक	.	.
५५५ शिवनाथसागर (वैद्यक)		
५५६ [illegible]प्रकाश (नैमित्ति[illegible]	.	

अनुक्रमणिका ।

जराध्याय ४

संगृहीताध्याय ५

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता

ओंतत्सत्

शरीरपुष्टिविधान

प्रकीर्णाध्याय १.

यह बात पूर्ण रूपसे सिद्ध होचुकी है कि देश, समय, क्ृति, अवस्था आदिके अनुसार खाने, पीने, सोने, परिमम आदि आहार विहार करने तथा रोगोंसे यथा संव वचनेहीसे शरीर पुष्ट रहता है और अन्यथा करसे शरीर रोगी और निर्बल होता है, इस हेतु हम इस ध्यायमें प्रथम इनबातोंका संक्षित वर्णन करते हैं, क्योंके उक्त बातोंके परिज्ञान विना मनुष्य आहार विहार की योग्यता अयोग्यताका मूल हेतु नहीं जानसकते ॥

देश।

जिस प्रांतमे नदी, नाले, डाबर, झील, दलदल, छोटें वृक्ष, वन अधिक हों वह अनूप देश कहाता है वहाँकी प्रकृति वादी (वातल) कफकारक ठंढी होती है ॥
और जहाँ सूखे रेतले मैदान या जंगल हों उसे जांगल कहते है इसकी प्रकृति गरम पाचक पित्तकारक होती है और मिश्रितकी मिश्रित होतीहै ॥

या यों समझो कि जहाँ कुवोंमें जल निकटहो वहाँकी प्रकृति वादी (मरतूब) और जहाँ नीचाहो पैत्तिक ॥

समय-(ऋतु)।

मेष वृषकी संक्रान्ति ग्रीष्म, मिथुन कर्ककी प्रावृट्, सिंह कन्याकी वर्षा, तुला वृश्चिककी शरद, धन मकरकी हेमंत, कुंभ मीनकी वसंतऋतु होतीहै-ग्रीष्ममें गरमी की अधिकता और शरीरमे वायुका संचय होता है, प्रावृट् गरमी और वर्षाकी संधी है इसमें वायुका कोप होता है, वर्षामें रतूबत अधिक होती है और पित्तका संचय होता है शरद वर्षा और जाड़ेकी संधि है इसमें पित्तका कोप होता है, हेमत सरदी इसमें पाचक जठराग्नि बलवान् होती है और कफका संचय होता है तथा वसंत सरदी और गरमीकी संधि है इसमें कफका कोप होताहै।

इस हेतु ग्रीष्ममे गरम और वादी पदार्थोंसे बचना दिनमें सोना, अतिश्रम रहित रहना तथा बहुतही कम (१५ दिनमें एकबार) मैथुन करना चाहिये-वर्षामे मैले स्थान, मैलीवस्तु वो नदीका जल, गरिष्ठ भोजनसे बचना ऊँचेस्थानोंमे रहना चाहिये और सरदीमें चिकना पुष्ट भोजन तैलाभ्यंग और व्यायाम (कसरत) करना उत्तम है ॥

तथा गेहूँ, दूध, घृत, खाँड कूवेका ताजा जल, छाया

में सोना, अपनेसे छोटी स्त्री सदा पथ्य अर्थात् (तन्दुरुस्तोंको) गुणदायक है ॥

कोदोंका अन्न, बासीदूध, उखराया दही, बेसमय अति भोजन, अपनेसे बड़ी स्त्री, प्रभातका सोना सदा कुपथ्य है ॥

प्रकृति ।

जो मनुष्य रूखाहो, दुबलाहो, बाल कड़ेहों, बहुत बोले वह वायू (सौदावी) प्रकृति होता है ॥

तथा जो दुबलाहो, पर रूखा नहो क्रोधयुक्त हो, पाचक (हाजमा) शक्ति अधिकहो, बुढ़ापेके पहेलेही बाल श्वेत होने लगें तो उस मनुष्यको पित्तप्रकृति (सफरानी) जानो ॥

और जो स्थूल मोटा हो, गंभीर हो, बाल नरमहों, कमबोले, अधिक सोवे, स्थिर बुद्धि हो, उसे कफ (बलगमी) प्रकृति समझो ॥

वात प्रकृतियोंको रूखा, ठंढा, वादी भोजन हानिकारक और तर गरम श्रेष्ठहै ॥

पित्तप्रकृतियोंको पतला, ठंढा, तर भोजन गुणकारी और गरम कड़ा चरपरा हानिकारक ॥

कफ प्रकृतियोंको श्रम, रूखा, गरम आहार, शोषण वस्तु गुणदायक और पतली, ठंढी, अतिचिकनी, गरिष्ठ दुःखदायी है ॥

शरीर पुष्टिके लिये ऐसी बातोंका अवश्य विचार चाहिये ॥

अवस्था।

बालअवस्थामें पित्तकी अधिकता होती है और फिर ज्यों ज्यों मनुष्यकी अवस्था बढ़ती है त्यों त्यों कफ और वायु बढ़ते हैं ॥

तरुण अवस्थामे कफकी और वृद्ध अवस्थामे वायुकी अधिकता होती है ॥

इसीसे बालकोंकी जठराग्नि प्रबल होती है कई बारका भोजन किया भली भाँति पचजाता है—तरुणावस्थामें बल पराक्रम अधिक होता है श्रम मैथुनकी शक्ति अधिक होती है जठराग्नि स्थिर होजाती है जिससे दो बारका किया भोजन तो ठीक पचजाता है अधिक नहीं ॥

वृद्ध अवस्थामें वायुकी अधिकतासे शरीरकी धातु उपधातु सब (अच्छा भोजन मिलनेपरभी) स्वयं शोषित होने लगती हैं वायु दोषसे जठराग्नि विषम होती है जिसमें कभी दोवारका भी भोजन पच जाता है कभी नहीं पचता भोजनके रसको वायु शोष लेता है इससे शरीर क्षीणही होता जाता है ॥

स्वस्थ (तंदुरुस्त) मनुष्योंके शरीर पुष्टिकारक नित्यके वर्त्ताव संक्षिप्त दिनचर्या।

सब मनुष्योंको प्रभात (पिछली चार घड़ी रात) से उठना चाहिये प्रभात सोने या पड़े रहनेसे आलस्य शिथिलता प्रमेह आदि होते हैं ॥

फिर कुछ ईश्वरका चिंतवन कर दिशा शौच जाना चाहिये शौचके समय शिर अवश्य ढापना चाहिये नहींतो मलके अणु मूर्द्धाको हानि करते हैं ॥

फिर हाथ मुँह धो कुल्लाकर कीकरकी दंतधावन (दतौन) करनी चाहिये कीकरकी दतौनसे दाँत दृढ़ होते हैं तथा नींब, खदिर, महुवा और अपामार्गकी दतौनभी श्रेष्ठ है ॥

इस पीछे शरीरपर विशेषकर शिर मुँह पाँव हाथ तैल मलना उचित है गरमीमें चौथे [illegible] दिन और [illegible] ७ दिनमें तीनबार वा नित्य तैलमर्दनसे त्वचा [illegible] मजबूत होती है खुश्की रुधिरविकारमें हितहै, [illegible] मनुष्योंको इसकी अधिक जरूरत है ॥

तैल मलनेके पीछे उबटन मलना चाहिये इससे [illegible] और मैल नाश होजाता है ॥

फिर शरीरके समान निवाये जलसे स्नान करन उचित है स्नानके समय देशी वस्त्रके अँगोछेसे शरी मलना और साफ करना चाहिये ॥

फिर निर्मल धोती पहिने। ऋतुके अनुसार तिलक लगाना चाहिये गरमीमे चंदन कपूर, सरदीमें चंदन केशर, वर्षामें तीनोंको मिलाकर मस्तकपर लेपन क ना—इससे दुर्गंधि वायुका बुरा प्रभाव न हो मस्त (मृदुस्थान) सरदी, धूप, लू, ओस आदिसे बचारहे ॥

फिर नयनामृत अंजन नेत्रोंमें लगाना और ऋ ओंके अनुसार उज्ज्वल वस्त्र पहिनना ॥

ये सब कृत्य दोघंटामे अच्छे प्रकारसे हो सकते फिर यदि हो सके तो कुछ भ्रमण पर्यटन करना औ ४ घड़ी दिन चढ़े लोटकर आजाना फिर अपना निज कृत्य करना ॥

पहरदिन चढेपीछे दोपहर पहिले भोजनकरना चाहिये भोजनमें पहले मधुर स्निग्ध पदार्थ खाने चाहियें पीछे चरपरे खट्टे अंतमें कटु और कसैले और समाप्ति के समय मधुररससे समाप्त करना हो सके तो अंतमें निवायादुग्ध पीना उचित है ॥

जल भोजनसे पहिले पीना उचित नहीं भोजनके . अच्छाहै, अंतमें पीना कफ बढाता है ॥

रोशनी नेत्रों और दिमागको हानिकारक है–रातका पढ़ना गरमीमें ठीक नहीं पहर रात गये पीछे सोना चाहिये ॥

मैथुन सब ऋतुओंमें तीन दिनमें एकवार और ग्रीष्म (गरमी) में १५ दिनमें एकवार चाहिये ॥

अपनी अवस्थासे बड़ी, रोगयुक्त, रजस्वला मैली स्त्री उचित नहीं ॥

अतिमैथुन करना बहुत बुराहै निर्बलता का सबसे मुख्य कारण यही है–अतिमैथुनसे अनेक दारुण रोग लगजाते है, संतान नहीं होती, उमर घटजाती है, आनंद भी नहीं रहता इससे मैथुन कम करनाही परम पुरुषार्थका हेतु है ॥

इन सब बातोंका विशेष वर्णन हमारी पुस्तक सत्कुलाचरण या आरोग्यसुधाकरमें देखो ॥

(२) क्षीणाध्याय ।

इस अध्यायमें निर्बलता (कमजोरी) एवं धातुक्षीणता क्षयी कृशता आदिका वर्णन किया जायगा ।

निर्बलता ।

इस समय हमारे भरतखडमे निर्बलताकी इतनी अधिकता है कि सौ पीछे नव्वे क्या पंचानवे यह

कहते हैं कि हम बहुत निर्बल है काम करनेमें पूर्ण-शक्ति और उत्साह नहीं और विशेषकर इस समयके जवान लड़कोंमें इस वातकी बहुतही अयोग्य शिकायत है ॥

इसके मुख्य हेतु कई प्रतीत होतेहैं ॥

(१) वाल अवस्थाका विवाह और द्विरागमन होकर स्त्रीका अनुचित संसर्ग ॥

(२) कुपात्र वालकोंके संगसे बुरे विचार और खोटे चरित्रोंका ध्यान ॥

(३) घृत दुग्ध आदिकी महँगीसे यथोचित स्निग्ध भोजनकी स्वल्पता ॥

(४) किसी न किसी द्रव्यादिकी चिंता ॥

(५) मैथुनका अनर्थ रूपक अधिक प्रचार ॥

(६) देशमें आये दिनकी बीमारियोंके कारण रीरिक सत्त्वका घटना ॥

(७) स्वदेश प्रकृति विरुद्ध आहार विहारकी पृथा यादि कई कारण हैं ॥

इनमे कई कारण तो ऐसे है कि जिनका प्रतीकार एक मनुष्य स्वय नही करसकता परंतु हाँ इस ाधिके प्रबल कारण बालविवाह तथा अयोग्य चरिका ध्यान अतिमैथुन आदिसे बचनाही परमोप-

कारक है—क्योंकि सब धातुओंके निचोड़ शरीरके सार भाग वीर्यकी रक्षा करनी ही शरीरपुष्टिका एक दृढ़ उपाय है ॥

और यह तो प्रगट ही है कि जिस मनुष्यकी धातु पुष्ट होगी उसके शरीरमें अधिक बल होगा तथा प्रायः रोगभी नहीं होंगे ॥

निर्बल मनुष्योंको अधिक परिश्रम तथा मैथुन गरिष्ट भोजन अधिक सरदी और गरमीसे बचे रहना चाहिये ॥

धारोष्ण गोदुग्ध तथा अजादुग्ध मिश्री सहित सेवन करना श्रेष्ठ है ॥

निर्बल मनुष्योंको पुष्ट औषध, इतना गुण नहीं करती जितना दुग्ध करता है। हाँ यदि जठराग्नि बिगड़ी हो तो उसका बल अवश्य करना ॥

धातु क्षीणता ।

अति श्रम करने, अधिक मैथुन, चिंता, शोक आदिसे एक अथवा कई धातुओंमे क्षीणता होजाती है अथवा दोषोमें ॥

रस, रक्त मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और वीर्यसे[1]

---

[1] रसाद्रक्तं ततो मास मासान्मेद प्रजायते ॥ मेदसोऽस्थि ततो मज्जा मज्ज्ञ क्रसम्भव ॥ १ ॥ सुश्रुते

ातु हैं और वायु, पित्त, कफ ये तीन दोष, इनकी उत्प-
ति सुश्रुतमें यों लिखी है कि आहारसे रस बनताहै
और रससे रक्त (खून) तथा रक्तसे मास मांससे मेदा
दासे अस्थि (हड्डिये) और अस्थिसे मज्जा और मज्जासे
क्र अर्थात् वीर्य बनताहै ॥

उत्तरोत्तर उत्कृष्ट होनेके कारण वीर्य सब धातुओं
ा सारभाग है ॥

वातक्षयमें अल्प चेष्टा हो मंदवचन बोले संज्ञामें
कार हो जाय ॥

तथा जिसके शरीरकी कांति घटजाय, जठराग्नि
द हो जाय, श्लेष्मा बढ़जाय उसके पित्तक्षय जानिये ॥

जिसके संधिशिथिल हो, रूक्षता और दाहहो, मूर्च्छा
ाने लगे उसके कफक्षय जानिये ॥

रस क्षीण होजानेसे कलेजा दूखने लगे, कंठमें खुश्की
; त्वचा शून्यसी होने लगे, प्यास अधिक लगे ॥

और जिसके रक्तमें क्षीणताहो शिरा मंदहो ठंढे और
म्लरसकी इच्छा अधिक हो त्वचा मुलायम न रहे ॥

---

१ वातक्षयेऽल्पचेष्टत्वं मन्दवाक्यविसंज्ञता ॥ पित्तक्षयेऽधिकं श्लेष्मा वह्निमान्द्यं
ाक्षय. ॥ सन्धय शिथिला मूर्च्छा रौक्ष्यं दाहः कफक्षये ॥ १ ॥ भावप्रकाश

उपरोक्त क्षयोंमें तत्तद्वर्धन जो द्रव्यादि ऊपर लिखे अथवा अन्य पदार्थ जिसमें कोई विशेष हानिका भय नहो तो गुणकारक भी होते है, इससे क्षीण मनुष्यको जिस वस्तुकी सत्य रुचि हो यथार्थ में वह उसकी परम औषध है परंतु मात्रामें बहुत थोड़ी २ देना योग्य है ॥ +

सव धातुओंकी क्षीणतामें दुग्ध विशेषकर सद्य गो दुग्ध अथवा अजा (वकरी) का दूध बहुतही श्रेष्ठ है ॥ और मैथुन से बचना परम पथ्य है ॥

इसे राजयक्ष्मा तथा शोष रोग भी कहते है । इसमें शरीरकी सब धातु सूखकर मनुष्य अत्यंत कृश (दुबला) और निर्बल होजाता है यह अनुलोमज तथा प्रतिलोमज भेदसे दो भाँतिका उत्पन्न होता है ॥

*जिसमें मंदाग्नि–अजीर्ण–तथा विषमाग्नि अथवा वि*षम आसन (बैठे रहना) अनुचित या बहुत ... जन करना या अतिचिंता शोक आदिसे ... ठीक परिपाक न होना आदिसे प्रथम रस ...

× दोषाधातुमलक्षीणो वलक्षीणोपि मानव ॥ तत्तत्स्ववर्द्धन ... पान मकाङ्क्षति ॥ १ ॥ यद्यदाहारजात तु क्षीणः प्रार्थयते नरः तस्य तस्य च लाभेन तत्तत्क्षयमपोहति ॥ २ ॥ भा० प्र० ।

इस क्षीणतामें प्रायः यहभी देखा जाता है कि जिस २ प्रकारके द्रव्यों और रस आदिसे वह क्षीणता नाशहो अर्थात् जिस २ दोष या धातुकी शरीरमें स्वल्पता हो उसीके वर्द्धन करनेवाले पदार्थोंपर मनुष्यों की सत्य रुचि होती है–देखो भावप्रकाश जैसे–

वातक्षीण मनुष्यकी रूखे, कड़वे, कसैले, शीत, लघु पदार्थोंपर रुचिहोती है–तथा पित्तक्षीणकी रुचि तिल, माष, पिष्ट अन्न, तीक्ष्ण, लवण, दधि, अम्लरस, क्रोध, गरम देश और समय की और अधिक होती है कफक्षीण पुरुष मीठारस, स्निग्ध भोजन, शीत, अम्ल, लवण, गरिष्टभोजन, दधि, दुग्ध और दिनके सोनेको अधिक चाहते है, रसक्षीण–ठंढा पानी, रातमे निद्रा, मधुररस चाहते हैं, रक्तक्षीण–इक्षु, मांस, रस, गुड़, शहद, घृत, द्राक्षा, अनार, नमकीन और चिकने भोजनमे रुचि रखतेहैं मांसक्षीण–दधि सिद्ध अन्न सयाव (हलुवा) चूरमा, मधु-, स्निग्ध भोजनकी विशेष इच्छा करते हैं–मेदक्षीण पुरुषको घृत, वसा, तडुल, पायसादि तथा क्षारवस्तुकी अभिलाषा होती है ॥

अस्थिक्षीणको दुग्ध अथवा मांस आदिकी रुचि होय, मज्जाके क्षयमें घृत माखन शिखरनकी रुचि होती है और वीर्यक्षयमें दुग्ध मिश्री माष तथा गोक्षुरादि पदार्थोंपर रुचि होती है ॥

खाँसी, थूकमें रक्तता, स्वरभेद (१) दोषोंक
अनुसार लक्षण (२)

शरीर बहुत रूखाहो,स्वरभग (आवाज बैठी) हो,श
रीरमें दरद रहे कंधे पसलीमें संकोचहो तो वातक्षयी है
शरीर गरम रहे दाह रहे दस्तहो मुहँसे रुधिर थूके त
पित्तकी राजयक्ष्मा जानिये ॥
शरीर ठंढा रहे, भारीसा रहे, भोजनमे रुचि नहो, श्वा
खाँसी हो तौ कफकी यक्ष्मा कहिये ॥

जिसमें सबके लक्षणहों तो सन्निपात क्षयी है ॥

विशेष कारणोंसे उत्पन्न हुए शोषके लक्षण।

अतिमैथुन-शोक-बुढ़ापा-व्यायाम-मार्गव्रण-औरु
भिघातन शोषके लक्षण ॥

अति मैथुनजन्य शुष्कतामे शुक्रका नाश,
पीली पड़ना, अतिनिर्वलता आदि होते है ॥

शोकजन्य यक्ष्मामे उसी वस्तुका ध्यान अत्य
शिथिलता पांडुता होती है ॥

१–तीनों दोषोंमेंसे वायु रसवहा नाडियोंमें भरजाय अथवा पित्त उन्हे तथा कफसे रुक जाय तो रक्तादि यथाक्रम नहीं बन सकते । २–भक्तद्वेषो श्वासः कासशोणितदर्शनम्॥स्वरभेदश्च जायेत षड्रूपे राजयक्ष्मणि॥१॥ भा

नाड़ियोंमे विगाड़ होने या रुक जानेसे भोजनादिका रस ठीक २ नहीं वनता और न रुधिर उससे वनकर शरीर पुष्टिका कारण होता किंतु रसके विगाड़ और क्षीण होनेसे रुधिरमे विगाड़ और क्षीणता होगी फिर उससे मास क्षीण होजायगा इसीभाँति मांस क्षीण होनेसे मेद क्षीणहोगी फिर उससे अस्थि, मज्जा और वीर्य यथाक्रम क्षीण होकर सूखजाते है—इसे अनुलोमज (सीधी क्षयी) कहते है॥

तथा अत्यत मैथुन करने—अथवा बुरे बुरे विचारो ेर उत्पातोसे वीर्य नाश होने—अतितीक्ष्ण औषध से- ो करने स्तभनकी लालसासे शोपणद्रव्योंका उपयो- करने अति नशाकरने, वलवती,वृद्धा,क्षीणा, उपदंशा- रोगवती रजस्वलादि स्त्रियोका संग करनेसे वीर्यमे ोणता होजाती है, फिर वीर्य क्षीण होनेसे मज्जामें क्षी- ता होती है फिर मज्जासे अस्थिमे तथा मेदा और मांस र रुधिर और रस यथाक्रम क्षीण होकर सूखने ते है। इसे प्रतिलोमज (विपरीत) क्षयी कहते हैं । में इसके अनेक भेद कहे है इसके मुख्य लक्षण कि भोजन शरीरको न लगे, देह गरम रहे, श्वास,

परंतु ये निम्न लिखित प्रयोग सबप्रकारकी क्षयं में श्रेष्ठ है दालचीनी १ भाग, इलायची छोटी २ भाग छोटी पीपल ४ भाग, वंशलोचन ८ भाग, मिश्र १६ भाग इन सबका आधा गोघृत और सबकी समा शहद मिलाकर अनुमान ४ से ६ मासेतक नित चाटे ऊपर बकरीका दुध पीवे ॥

अथवा इसके साथ पावरत्ती नित्य मालती वसंतर या मृगांक या सुवर्णका वर्क सेवन करना बहुत श्रेष्ठ है

पथ्य–अनुलोमजक्षयीमे गरिष्टभोजन तथा वा कफकारक वस्तुसे बचना और प्रतिलोमजमे रूख भोजन अति गरम वस्तु परिश्रम तथा मैथुनका अव श्य पथ्य बचाव करना चाहिये ॥

कारण विशेषसे उत्पन्नहुए शोथका उपाय !

अति मैथुनजन्य शोपमें स्निग्ध मांस रस युक्त मधुरभोजन–ऐसा यत्न जिससे वीर्य पुष्ट हो–औ घृत मधुयुक्त दुग्ध और आनंदके वचन हित हैं औ मैथुनका त्याग–

अति परिश्रमजन्य शोपमें शरीरमें बल देनेवाली वस्तु जैसे सयाव अथवा घृतपूप (पूवे) ॥

वृद्धावस्थाकी शुष्कतामें दुवलापन, बुद्धि वल इंद्रिय मद शरीर और ग्रीवामे कंप, अंङ्गोंमे प्रसुति अधिक ये लक्षण होते है ॥

मार्गशीर्षमे थकानसी सदा रहती है।

व्रणजन्य यक्ष्मामे मनुष्यकी कांति घटजाय तृषा अधिक रहै ॥

क्षयीकी चिकित्सा।

इसकी मुख्य चिकित्सा यह है कि, यदि अनुलोमज क्षयी हो तो जठराग्नि ठीक करने और भोजनका रस शरीरमे पहुंचानेवाली पाचन और दीपन औषधियों का उपयोग करना चाहिये जिससे रसकी शुद्धि और पुष्टि होकर फिर उससे शुद्धरक्त आदि उत्पन्न होकर वीर्य पर्यन्त धातुवोंको पुष्टकरें। जैसे यथोक्त अदरक सेवन—अथवा लवगादि चूर्ण या क्षुद्रादिक्षार ॥

और यदि प्रतिलोमज हो तो ऐसा यत्न करना चाहिये।जिससे वीर्यकी पुष्टि होकर मज्जा आदि रसपर्यंत पुष्ट हों जैसे च्यवनप्रास (एकभांतिका आमलेका अवलेह)अथवा कूष्मांडपाक अजादुग्ध॥

साराश यह है कि, अनुलोमजकी औषधि प्रायः जठराग्निवर्द्धन पाचन और प्रतिलोमजकी पुष्टि ॥

हाथ पाँव गरम और देह चिकनीसी हो तृषा अधिक लगे मुँह मीठा रहे ॥

प्रमेह २० प्रकारका होता है १० प्रकारके कफ प्रमेह ६ प्रकारके पित्तप्रमेह और ४ प्रकारके वात प्रमेह-इनके सिवाय १ मधु प्रमेह जो त्रिदोषसे होता है ॥

प्रमेहके लक्षण ।

(१) जिसमें सफ़ेद और ठढा निर्गंध तथा अधिक अथवा बार २ जलके समान मूत्र आवे तो उदक प्रमेह जानो ॥

(२) ईखके रससमान मूत्र होतो इक्षुप्रमेह है ॥

(३) कुछ गाढ़ासा (थोड़ी देर रखनेसे गाढ़ा हो-जाय) ऐसा मूत्र होतो सांद्रप्रमेह है ॥

(४) मद्यके समान या (रखनेसे नीचे गाढ़ा ऊपर पतला रहे) ऐसा मूत्र होतो सुरा प्रमेह है ॥

(५) पानीमे घुली पीठीके समान तथा श्वेत और कुछ कष्टसे मूत्र आवे, मूत्र ठढा हो और वेगके समय रोमांच हो तो पिष्टप्रमेह है ॥

(६) मूत्रके साथ शुक्र गिरै तो शुक्रप्रमेह है ॥

(७) जिसके मूत्रमें वालूरेतसी कफकी फुटक होतो सिकताप्रमेह है ॥

अध्वशोषमें थकान दूर होनेवाली वस्तु जैसे दुग्ध, दिवाशयन ॥

व्रणशोषमें घृत संयावादि स्निग्ध भोजन देना परंतु दुग्ध गुणकारक नहीं है ॥

शोकजन्यका यत्न संतोष और ज्ञानके वचन है तथा शोक भुलाना ॥

जराशोष बुढ़ापेकी क्षयी असाध्य होती है इसका यत्न ईश्वरस्मरणके सिवाय और क्या है ॥

प्रमेह रोग।

हम प्रमेह (जरियान) को भी इसी अध्यायमें लिखना उचित जानते है—

शरीरका वीर्य बहुत पतला होकर मूत्रके सग या पहले पीछे या और समय गिरे उसे प्रमेह रोग कहते है—प्रमेहरोग विषम आसन बैठे रहने, अधिक सोने, या पड़े रहने परिश्रम न करने—गुड़ दही मिठाई अधिक खाने, अथवा अति मद्य पीने, खारी कडुवा रस अथवा खटाई अत्यंत खानें, भोजनपर भोजन करने, अधिक परिश्रम तथा मैथुन करने, मैथुनका अधिक ध्यान रखने, अति गरम औषध और पदार्थ खाने आदिसे मनुष्योंको होता है ॥

प्रमेहका पूर्वरूप यह है कि जिह्वा दाँत मलीन हों

(२०) हस्तीके मद सम मूत्र हो वेग अधिक न हो तो हस्तिप्रमेह जानिये ये ४ वायुके प्रमेह हैं ॥

प्रमेहके उपद्रव ।

जब प्रमेह बढ़ने लगता है तव निम्न लिखित उपद्रव होजाते हैं जैसे कफके प्रमेहमें अरुचि, मंदाग्नि, अजीर्ण, छर्दि, निद्राधिक्य, खाँसी तथा पीनस हो और पित्तके प्रमेहमें इंद्रिय और पेडूमें जलन, ज्वर, दाह, प्यास, अधिक मूर्च्छा, चक्कर, अतीसार खट्टीडकार आवे ॥
और वायुके प्रमेहमें विषमाग्नि, हृदय दूखना, शूल, कँपकँपी, निद्राकी अल्पता, शुष्कता, श्वास तथा खाँसी आदि उपद्रव होते है ॥

कफप्रकृति अथवा मेदा अधिक जिनके शरीरमे हो (स्थूल) आदमियोंके कफ प्रमेह और पित्तप्रकृति (आतशी मिजाजों) के पित्त प्रमेह और सूखे रूखे दुवले वात प्रकृतियोंके वायुके प्रमेह बहुधा होतेहैं ॥

प्रमेहका यत्न ।

कफ प्रमेहकी चिकित्सा गरम रूक्ष प्रमेह रण रंग औषध और आहार विहार है ॥

पित्तप्रमेहकी रूक्ष शीतलता सहित प्रमेह नाशक औषध और आहार विहार है ॥

(८) बहुत ही ठंढा मूत्र होतो शीत प्रमेह जानो ॥
(९) बार २ थोड़ा २ मूत्र आवे तो शनैः प्रमेहहै ॥
(१०) जिसके मूत्रमे या पीछे तारसे छूटे उसे लाला
मेह कहते हैं ॥
ये उपरोक्त १० कफके प्रमेहहैं ॥
(११) जिसके मूत्रमे खारकीसी गंध तथा रंग
तो क्षारप्रमेहहै ॥
(१२) जिसके मूत्रमे रंग नील वर्ण हो तो नील
मेहहै ॥
(१३) मूत्रका रंग श्याम होतो काल प्रमेह है ॥
(१४) हलदीके समान, दाहयुक्त कडुवा मूत्र हो
हारिद्र प्रमेह है ॥
(१५) मजीठेके पानी समान दुर्गंधियुक्त मूत्र होतो
जिष्ठ प्रमेह जानो ॥
(१६) जिसके मूत्रका रंग लाल अथवा रक्तसहित
छे जलन हो तो रक्त प्रमेह समझो ये उक्त ६ पित्तके
मेह हैं ॥
(१७) वसा (चरवी) समान मूत्र हो तो वसाप्रमेह है ॥
(१८) मज्जा समान चिकना मूत्र हो तो मज्जा
मेहहै ॥
(१९) कसैला रूखा मीठा मूत्र हो तो क्षौद्र प्रमेह जानो

का चूर्ण २ भाग हर्र का चूर्ण १ भाग चक (दालचीनी) आधाभाग इन सबको एकत्र कर शहदके संग ६ मासा नित्यखाय तो श्रेष्ठहै ॥

पित्तप्रमेहकी औषधी।

खस, लोध, ऑवला, हर्र इनका क्वाथ मिश्री अथवा शहदके संग पीना ॥

मुलहटी, श्वेतचंदन और दाख (मुनक्का) इनका शीत कषाय मिश्रीके संग पीवे या इनका शरबत पकाकर उसमेसे नित्य पीवे तो पित्तप्रमेह तथा रक्त प्रमेह नष्ट होय ॥

अथवा गोखरूके चूर्णमे समान मिश्री मिला गोदुग्ध अथवा बकरीके दूधके संग लेना ॥

अथवा त्रिफला और गोखरू समान ले रात्रिमें भिगो प्रभात छानकर शहदके संग पीवे तो पित्तके प्रमेह दूरहो ॥

ऑवलापाक (एकभॉतिका जवारिश ऑवला भी) पित्त प्रमेहमें परम हित है ॥

वायुके प्रमेहकी औषधि ।

त्रिफला और गोखरूके चूर्णमें उसके समान गो घृत और सबकी समान शहद मिलाकर चाटना॥

अथवा सिद्दामृत घृत या धन्वंतर घृत श्रेष्ठ है॥ अथवा त्रिफलाघृत सेवन करना ॥

वायुके प्रमेह इसीलिये असाध्य हैं कि, प्रमेहकी ओषधि प्रायः शोषण होती है जो वायुको उलटी बधावे और कोप करें इसीसे इसकी चिकित्सा टेढ़ी है अर्थात् स्निग्ध और प्रमेहनाशक क्रिया करनी कुछ अनुकूल होती है ॥

कफप्रमेहकी औषधि।

(१) हर्रकी छाल–नागरमोथा–कायफल–लोध इनका क्वाथ कर शहदके संग पीना श्रेष्ठ है ॥

(२) अथवा त्रिफला, दारुलदही, नागरमोथा, देवदारु इनका क्वाथ मधुयुक्त पीना ॥

अथवा कुरय्ना (कुड़ा) त्रिफला, दारुहलदी, मोथा, बीजबंधका क्वाथ मधुयुक्त अथवा त्रिफला शहदके संग सेवन करना अथवा त्रिफला चूर्ण गोक्षुरु (गोखरू) का चूर्ण दोनो समान ले शहद संग सेवन करना ॥

अथवा त्रिफलामोदक का सेवन करना अथवा दशमूलासव या देवदारु अरिष्ट या बबूलारिष्टका यथोक्त सेवन करना ॥

अथवा कीकरके फलोंका चूर्ण ४ भाग गोखरू

(१) भावप्रकाशात्। (२) शार्ङ्गधरात्।

१–२–३–४ त्रिफलामोदक तथा दशमूलासव व देवदारिष्ट आदिकी क्रिया लगाडी सगृहीताध्यायम होगी ॥

मनुष्य बहुत ही क्षीण होजाय बहुत बढ़ने पर मूत्रका ज्ञान भी न रहे॥

इस मधुप्रमेहकी सर्वोत्कृष्ट औषध शुद्ध शिला-जतु (शिलाजीत) के समान और कोई नहीं है यथार्थ तो यह है कि मात्र प्रमेह, कोईसा और कैसाही क्यों न हो शिलाजीत सबके लिये बहुत श्रेष्ठ औषध है॥

प्रमेहके पथ्य और अपथ्य।

कफसे प्रमेहमे दही, दूध मक्खन, खोवा, नय गुड़, खटाई, पीठीकी वस्तु, डाबरका पानी आदि औ कफकारक वस्तुवों से बचना उचित है–तथा पित्त प्रमे हमे, खटाई, गुड़, तेल, तिल, मधु, लालमिरच, लालश क्कर, धूप, अग्निसेवासे परहेज रखना चाहिये तथा व युके प्रमेहमें रूखाअन्न नशा करना बारबार भोजनसे बचना चाहिये॥

और अनुचित गरिष्ट भोजन नशा अधिक करना तथा स्त्रीसंगमका तो सभी प्रमेहमात्रमें निषेध उचित है॥

तथा प्रमेहवालेको चाहिये कि, गेहूँ, चना, मूंग, अरहर आदि अन्न पुराना खाय अथवा यव और पुराना रक्तशालि खाय॥

और जिन वस्तुवोसे प्रमेहकी उत्पत्ति हो उनसे

ऐसी औषध जो साधारणतासे सब प्रमेहोंमें उपकारक हैं।

(१ गोखरूपाकका सेवन ॥

२) सुपारी पाक ॥

(३) प्रमेहहरण या प्रमेहसेतु चूर्ण ॥

(४) विधिपूर्वक शुद्ध शिलाजतु (शिलाजीत)
का सेवन करना ॥

(५)भस्म लोह (सार) ✻(कारबोंट आफ आइरन)
या रंग या रूपरस किसी वैद्यकी सम्मति या डॉक्टर-
की रायसे लेना ॥

मधुप्रमेह ।

प्रमेहोंकी असाध्य और दारुण अवस्थायें मधुप्रमेह
होता है अर्थात् प्रमेहरोगवाला मनुष्य उचित उपाय न
करे किंतु उलटा कुपथ्य करता रहे जिससे प्रमेह पुराना
पड़कर त्रिदोषजन्य मधुप्रमेह होजाता है ॥

इसके लक्षण ये हे कि, मधुके समान मूत्र बारबार
आवे मूत्रमें चींटियाँ लगने लगै शरीर अत्यंत दुर्बल
होजाय सब धातु उपधातु मूत्रमार्ग हो बहते बहते

✻ कारबोंट आफ आइरन-अंग्रेजीमतसे फुकी हुई फोलादको
कहते है—यह अंग्रेजी दवाफरोंशोंसे मिलती हे ॥

चिह्न ही यथावत् नही होते जैसे हरनगरमें (जनखे या हीजड़े) प्रसिद्ध हैं इनमें कई पुरुपसंज्ञक क्लीब होते है कई स्त्रीसंज्ञक ॥

परंतु बहुतसे जन्म क्लीब ऐसे भी होते हैं जिन्हें बाल अवस्थामे साधारण लोग नहीं जान सकते फिर ब्या ह गौना होकर स्त्री संगमके समय भेद खुलता है तो दोनो ओर रोना पड़ता है बालविवाहमें यह भी एक बड़ा हानिकारक दोप है ॥

हमारे सुश्रुतादि ग्रन्थोंमें इनके कुभक आदि का भेद लिखे है जिनका वर्णन ग्रन्थबाहुल्य निष्प्रयो जनता और अश्लीलताके कारण नहीं कियागया ॥

ये जन्मक्लीब प्रायः तो असाध्य ही होते हैं अर्थात् जिनके चिह्न ही यथावत् नहीं होते उनके किसी य त्नसे चिह्न नही बन सकते परंतु यथा योग्य चिह्न और शिरा (नसें) हों तो जन्मक्लीब भी शायद सुधर सकते है पर उनके लिये ईश्वरकी कृपा और परिपूर्ण वैद्य और यथोचित सामग्रीका होना है ॥

(२) मानस क्लैव्य ।

जो मनकी शंका ग्लानि भय आदिसे हो अर्थात् कभी अपनेसे बलवती (जबरदस्त) बड़ी या दुष्टा वैर

१–द्वेष्यस्त्रीसंप्रयोगाच्च क्लैब्य तन्मानस स्मृतम् (सुश्रुत, भावप्र०)

श्य परहेज रखना चाहिये । जो प्रमेह रोगके आर-
लिखे गयेहैं ॥

(३) नपुंसकाध्यायः ।

जो मैथुन करनेकी सामर्थ्य न रखते हो उन्हे नपुं-
अथवा क्लीव (हिजड़ा या मुखन्नस) कहतेहैं—वै-
शास्त्रमें इस नपुंसकताके सात भेद कहेहैं ॥

(१) सहज (जो जन्मसे नपुंसक हो) ॥
(२) मानस जो मनकी शंका ग्लानि भयादिसे हो ॥
(३) वीर्यके विकारसे हो ॥
(४) वीर्यकी क्षीणताऔर कमीसे हो ॥
(५) मेढ्र इंद्रियके दारुण रोगसे हो ॥
(६) वीर्यवाहिनी आदि शिराके छेदनादिसे हो ॥
(७) अति ब्रह्मचर्य (शुक्रकी स्थिरता) से हो ॥

सहज क्लीव ।

(जो जन्मसे नपुंसक हो) देखो सुश्रुत तथा भाव-
प्रकाश (१)

माता पिताके वीर्यदोष या गर्भविकार गर्भवतीके
विपरीत और अयोग्य आहार विहार दौह्रदकी अप्राप्ति
अथवा पूर्वसंचितपाप आदिके कारण कई मनुष्य
माताके गर्भसे ही क्लीव पैदा होते है—बहुतोंके तो प्रत्यक्ष

१ जन्मप्रभृति यत्क्लैब्यतत्क्लैब्य सहज स्मृतम् । (सुश्रुत)

बढ़ जातीहै–पर हिचक निकलनेपर कुछ रे
नहीं रहता ॥

(३) वीर्यविकारजक्लैब्य।

जो वीर्यके विगाड़ (अत्यंत पतला पड़ने) अ
विकारसे हो ॥

अर्थात् कटु रस खटाई, लवण, अति गर्म, रूक्ष उ
षधि (पित्तके बहुत ही वढ़ानेवाली) आहार वि
आदिके अधिक सेवन करनेसे पित्त बहुत ही बढ़
सौम्य (वीर्य पैदा करनेवाली धातुवोंको क्षीण
विगाड़) देता है जिससे वर्तमान वीर्य बिगड़ (अ
द्रवहो) कर निकम्मा होजाता है आगामीके लि
शुद्ध वीर्य उत्पन्न होनेका क्रम नष्ट होजाता है–जिस
मनुष्य नपुंसक होजाताहै ॥

वक्तव्य–इससमयके अति बलाकांक्षी पुरुष अने
मूर्खलोगोंके कहनेपर अनेक अनुचित औषधि
(कच्ची पक्की अशुद्धधातु अथवा कुचला आदि वि
या नशेके पदार्थ या और अत्यंततेज वस्तु) का उपयो
ग करते है या तीक्ष्ण तिला आदिका वर्त्ताव करते
जिससे यातो तुरत ही बड़ी हानि होती है या थोड़े दि

१ कटुकाम्लोष्णलवणैरतिमात्रोपसेवितै । सौम्यधातुक्षयोदृष्टः क्लै
तदपर स्मृतम् । (सुश्रुतः)

खसने वाली, कुवचन कहनेवाली, मलीन, वृद्धा या न-वीन या रोगवाली आदि स्त्रियोंके संग समय तथा सग-मके समय अति भय, रोग, लज्जा, शोक ग्लानि आदि के हेतु मनका वेग कामदेवकी ओर न हो तो उस स-मय मनुष्य पुरुपार्थहीन होजाता है और फिर उस बातकी शका और ध्यान मनपर ऐसे छा जाते हैं कि, वह अपनेको नपुंसक मानलेता है और जब उसे संभोगका काम पड़ता है तब वही मनका भ्रम उस समय भी ऐसा छा जाता है कि, कुछ नहीं बनपड़ता और फिर वारंवार ऐसा ही होता है ॥

मानस क्लैव्यके लक्षण और उपाय।

एकात तथा निद्राके समय प्रायः कभी पुरुपार्थ और चैतन्यता हो परं च स्त्रीजनोंके निकट आते ही सब कुछ उत्साहतक नष्ट होजाय ॥

इसका उपाय यही है कि, ऐसे मनुष्यको तसल्लीदे और भुलावेदे कि तुझे कुछ रोग नहीं है कुछ हिचका-वट है सो तुरत मिट जायगी संदेह मतकर—और विशेपकर ऐसी बाते उसकी स्त्रीके कहनेसे बड़ा लाभ होता है ॥

और यदि कोई मूर्ख या दुष्टा स्त्री उसे उलटा उल-हना देने लगे तो यह हिचक और उपाधि और भी

(१) ऑवलोंको ऑवलोंके रसकी भावना दे सु
खाकर चूर्णकर ६ मासा नित्य शहदके संग चाटकर
सद्य गो दुग्ध पीना ॥

(२) विदारीकंद और गोखरू कूटकर समा
मिश्रीमिला दश या बारहमासे नित्य फॉककर दू
मिश्री पीना ॥

(३) आवलापाक, कूष्मांडपाक तथा शतावरीप
क भी श्रेष्ठ है ॥

(४) ईसबगोलकी भूसीमे बराबरकी मिश्री मिल
दशमासे नित्य फंकी लेकर दूध पीना भी अच्छा है ॥

(४) वीर्य स्वल्पताजन्य क्लैव्य।

जो वीर्यके क्षय होजाने या अल्पता (कमी
आदिसे हो ॥

अर्थात् जो मनुष्य वीर्यबढ़ानेवाले आहार औ
वि करते या करसकते नहीं या उनसे बन नहीं सकते
और वे मैथुन शक्तिसे बढकर करते है या करनेकी इच्छा
रखते है अथवा और किसी दुर्व्यसनसे शरीरके रत्नरू
वीर्यको अधिक निकालदेते है तो वीर्यकी कमीसे उन
नपुंसकता होती है अथवा ६० वर्षसे अधिक अवस्था
होनेपर स्वय वीर्य कम हो जाता है

लक्षण।

थोड़ी चैतन्यता हो विना वीर्यगिरे शिथिलता हो

के लिये कुछ तेजसी होकर फिर शीघ्र ही त्रिल्कु निकम्मे होजातेहैं ॥

लक्षण।

वीर्य अत्यन्तपतला जलके समान या छीछड़ेदार (फटाहुआसा) होजाय या वीर्य भस्म होजाय–मैथुनमे शीघ्रस्खलित हो अथवा चैतन्य होते ही गिरजाय या चैतन्यता हीन हो चित्तपर गरमी रहे और उदासी ॥

उपाय।

इसका यही है कि, प्रथम तो उपरोक्त वस्तु विशेष कर खटाइ अति गर्म वस्तु और औषध नसेके पदार्थ और स्तभन (इमसाक) के अधिक वर्तावसे बचें बल्कि ऐसे समय किसी अनाड़ीकी तेज दवा अथवा यद्वातद्वा धातु फौलाद (सार) आदिसे यह रोग और भी बढ़जाता है इसीलिये कुछ उपाधि हो तो उसका सच्चा हाल कहकर किसी सुज्ञवैद्यसे निदानपूर्वक चिकित्सा करावे ॥

औषधि।

इसकी औपधि प्राय· शीतल स्निग्ध हैं जिनसे शरीर में सौम्यधातु बढ़ै और शुद्धहों ॥

१ अतिव्यवायशीलो यो न च वाजिक्रियारतः । ध्वजभगमवाप्नोति स शुक्रक्षयहेतुकम्। (सुश्रुतः)

प्रकृति वा अन्य देशकी स्त्रियोंके संगमसे होता है इस
का प्रथम हेतु अन्य देशीय स्त्रीसंगही है, फिर संक्रा
कलासे बहुधा फैल गया है इसीसे चरक और सुश्रुत
यह उपदंशसे अलग नहीं लिखा परंतु भावप्रकाश
समय (अन्य देशीय स्त्री संगसे) इसका प्रादुर्भाव हु
आ तो अलग लिखा॥

चिकित्सा।

उपदंश फिरंग (गरमी) तथा कृच्छ्रकी औषध वि
शेष हम नहीं लिखते किसी वैद्यसे इलाज कराना चाहि
परंतु हां इतना जरूर लिखते है कि उपदंश औ
फिरंग की औषध रक्त शोणित [illegible]
[illegible] स्नायु शिथिल या निर्वल होजाय य
उनमे जल भरजाय या मुड़ तुड़जाय या स्पर्शज्ञान
जातारहै इत्यादि अनेक कारणोंसे (मेढ़ही की उपाधिके
हेतु) नपुंसकता हो जाती है॥

शूकरोग उसे कहते है कि जो मूर्खलोग लिंगेन्द्रि
यकी वृद्धि स्थूलता दृढ़ता आदिके लिये यद्वा तद्वा तेज
औषध (विषआदि) तथा कोई तिला जो अनुचित हो
मूर्खों के कहनेसे लगा बैठते है उससे इंद्रिय पक

१ महता मेढ़रोगेण नराणा क्लीवता भवेत। २ अक्रमाच्छेफसो
द्धि योभिवाछवि मूढधी। व्याधयस्तस्य जायन्ते दश चाष्टौ च शूकजा.॥

जाय मैथुनमें देरसे वीर्य गिरे या विनाही वीर्यगिरे कभी चैतन्यता जातीरहे वीर्य थोड़ा गिरे प्रायः गाढ़ाहो–इस रोगमे थोड़ी चैतन्यतासी होकर भंग होजाती है इससे इसे ध्वजभंग भी कहते हे–परतु जब वीर्य अत्यन्तही स्वल्प होता है तो चैतन्यता होतीही नही ॥

उपाय ।

इसका यही, है कि पुष्ट वीर्य वढ़ानेवाले भोजन दूध, मलाई, रवड़ी खोवा और घृत आदि खाना और मैथुन से वचे रहना या वहुतही कम करना–
रूखी गरम वस्तु तथा नसेके पदार्थ और स्तंभनसे इसमेभी वचे रहना श्रेष्ठ है ॥

औपधि ।

इसकी प्राय· तर गरम वायुनाशक और वीर्य वढ़ाने वाली हे। जेसे उड़द– अश्वगंधा (असगध) इत्यादि अथवा॥

(१) आम्रपाक (हलवे ऑव)
(२) मूसलीपाक या असगंधपाक
(३) वादामपाक या नारियलपाक

अथवा दूधके संग मीठे ऑव चूसना अथवा उड़दकी खीर वनाकर खाना अथवा धातुसंजीवनी कस्तूरी-गुटिका अथवा मलाईका हलुवा खाना या वादामका

दन (कटने कुचले जाने या टूट फट जाने) आदिसेभी मनुष्य नपुंसक होजाता है ॥

जैसे अंडकोशके कुचलजाने या कटने अथवा गुदा और अंडकोशके बीच जो मोटी पुरुपार्थ रूप नाड़ी है उसके कट जाने या तीव्र व्रण (नासूर) हो जाने अथवा कानके पीछे एक नस है उसके कट जाने आदि या और मर्मच्छेदन आदिसे मनुष्य बिलकुल नपुंसक होजाता है (जैसे इनका उदाहरण बधिया बैल और आख्ता घोड़ोंकी क्लीवता है) ये क्लीव प्राय. असाध्य (१) होते है यदि कोई इनसे कष्टसाध्यभी हो तो ईश्वरकी दयाही उसकी दवा है ॥

(७) शुक्रकी स्थिरताजन्य क्लैव्य ।

जो अत्यंत ब्रह्मचर्य आदि शुक्रकी स्थिरतासे हो अर्थात् स्त्रीसगम करनेवाले पुरुप जो बहुत दिनतक (कई महीनो और बरसो) स्त्रीसंग और स्त्रियोका ध्यान और विचारतक न करें या न करसकें और हास्य विनोद स्त्रियोकी बातों और दर्शन स्पर्शनादिसे वंचित रहै और मैथुनका ख्यालभी प्राय. न करें तो उनका वीर्य स्थिर होजाता है (जमजाता है) जिससे उन्हें उमगही नहीं होती

---

१ असाध्य सहन क्लैव्य मर्मच्छेदाच्च यद्भवेत् । (भावप्रकाशे)

जायफल जावित्री लौंग दालचीनी एक २ छटाँक इसी हिसाबसे जितनी चाहै दवा लेके तेल खींचले फिर अग्रभाग और सीवन छोड़कर तीन दिन मले जब फुंसी निकल आवें तो रोपणी मलहम लगावे ॥

(९) यदि इंद्रिय मे जखम पड़गयाहो तो चाहिये कि चमेलीके पत्तोका रस ३ तोले, कूट और सुहागा और मैनासिल तीनो एक २ तोले ले तिलोके ६ तो- ला तेलमे पकाकर तेल मात्र रहजाय उसे शीशीमें रखे इसे ४२ दिनमे २१ बार तीसरे दिन एक २ बार लगावे एक दिन बीचका खाली छोड़े तो बाँकापन नि- कले और इंद्रिय दृढ़ और पुष्ट होजाय ॥

(१०) यदि इन्द्रिय टेढ़ी पड़गई हो तो उचित है कि होते हैं, हस्तक्रीड़ा आदिसे या तार्गेक छह छह मास जाता है या शिथिलता होती है या नसोंमें मली जल भर जाता है या नस मुड़ने आदिसे मेढ्र बाँकापन हो जाता है या ठीक २ चैतन्यता नही होती ये रोग जब बढ़ जाते है तो मनुष्य क्लीव हो जाता है।

उपदंश रोग अतिउष्ण भोजन रजस्वलागमन इंद्रियको न धोने आदिसे होता है ॥

और फिरंग रोग (आतशक) अपनेसे विरुद्ध

१ फिरंगिरोगे संसर्गात् फिरंगिन्याः प्रसंगतः । व्याधिरागन्तुजं दोषबाह्याभ्यंतरभेदतः ॥

बुढ़ापा।

वृद्धावस्था। (बुढ़ापा) वह अवस्था है कि अनेक प्रकारका सुख और उत्तम स्निग्ध बलदायक खान पान करते करते और अनेक भाँति यत्नसे रहते २ भी शरीर क्षीण बलहीन होताही जाता है बाल सफेद या पीले, दृष्टि मंद, दाँत हिल हिलाते बल्कि टूटही जाते हैं नाड़ हिलने लगती है, चलने फिरने की भी बहुत शक्ति नही रहती शरीर ढीलाही क्या त्वचा हाड़ोंको छोड़कर लटक जाती है। हाय! देखते देखते मनुष्य यह दशा होने परभी माया मोह नहीं छोड़ता मृत्युके दिन बहुत निकट होते हैं जो भलाई बने करलो इसकी दवा भी ईश्वरका स्मरण मात्रही है॥

वृद्धावस्थामे वायुकी अधिकतासे भोजनका रस शरीरको नहीं लगता इससे जहाँतक हो स्निग्ध वायु नाशक पदार्थ इस अवस्थामें हितकारक है जैसे गरम दूध, घृत, सयाव हलुवा आदि॥

बस यदि बहुतही बुढ़ापेमें उपरोक्त व्याधियाँ हो तो प्राय· उनका यत्न सफल नहीं होता परंतु इस समय अति बुढ़ापा न होनेपर भी बहुतोंको बुढ़ापेकी उपाधियाँ घेर लेती हैं जिनका यत्न करनेसे मनुष्योंको बहुत सुख हो सकता है॥

लक्षण।

मनुष्यका शरीर हृष्ट पुष्ट हो माथेमे तेज (चदगी) हो। परस्त्रीकी चाह न हो॥

उपाय।

सुदर स्त्रियोंके दर्शन उनकी मधुर वाणी सुनना राग रंग गीत श्रवण करना सुगध सूँघना मित्रोके सग। हास्य विनोद करना॥

सुन्दर स्त्रियोका हाव भाव कटाक्ष तथा नृत्य आदि देखना उचित है जिससे मनका उमंग बढ़े और वीर्य द्रव होकर अपना स्थान छोड़े ऐसे यत्न करने और उचित रीतिसे थोड़ा आसव पीनाभी श्रेष्ठ है तथा मनोहर किस्मे कहानी और रसीले काव्य पढ़ना स्वरूप चित्र देखना आदि उचित है॥

(४) जराध्याय।

इस अध्यायमें जराव्याधियो। बुढ़ापेके रोगो पलित (शरीरमे सलवट पड़ना, बाल सफेद होना) दाँतोका हिलना आँखोका त्यौर कम होना, गोड़े और कमर दुखना, श्वास आदि व्याधियोका प्रतीकार वर्णन होगा॥

---

१ बलिनः क्षुब्धमनसो निरोधाद्ब्रह्मचर्यतः। एतद्वृष्य स्मृत तत्तु शुकस्थैर्यनिमित्तकम्।

तेल निकाल नास लेनेसे वाल श्वेत न हों इसपर प्रायः दुग्ध चावल भोजन करना उचित है ॥

श्वेतवाल काले होने का तैल।

भंगरेके रसमें लोहचून और त्रिफला सारिवा इनका कल्क कर तेलमें पकावे इसके लगानेसे बाल कालेहों तथा खाज और इंद्रलुप्त (कुरा) मिटे ॥

दाँतोंकी दृढ़ता।

वहुत गरम २ भोजन खानें, पित्तकी अधिकता तथा गरम खानेपर ठंढा जल पीने तेज (उष्ण प्रकृति) वृक्षकी दँतोन करने–वहुतही गरम जलसे कुल्ली करने आदिसे दतमूल (मसूढों) का मांस ढीला होजाता है जिससे बुढ़ापे के पहलेभी दाँत हिलने लगते हैं और गिरजाते है ॥

तथा जूठन या मैल अधिक लगा रहनेसे दाँत गिरने लगते है या उनमें कृमि होजाते है ॥

तथा बहुत ठंढाजल या हिम (बर्फ) या अधिक खटाई से दाँतों में दुःख होता है ॥

दाँतोंके दृढ़ रखनेकी विधि।

(१) जो बातें ऊपर लिखी हैं जिनसे दाँतोको नि पहुँचे उनसे वचेरहनेसे दाँत दृढ़ रहते हैं

(पलित) बाल सफेद होना।

पित्तकी अधिकता अति उष्ण आहार विहार अति मैथुन अनुचित वर्तावसे अनेक देशांतर भ्रमण आदिसे (शारीरिक उष्मा) बहुत बढ़कर जब शांत होने लगती है तो वायु प्रबल होके बालोंको श्वेत करने लगती है इसी हेतु पित्तप्रकृति मनुष्योंके बाल शीघ्र श्वेत होते है–इससे इसकी औषधि भी वायुनाशक और कफवर्द्धक है क्योंकि कफप्रकृति मनुष्योंके बाल देरसे श्वेत होते है ॥

उपाय।

(१) असगंध आधसेर, विधायरा आधसेर दोनोका महीन चूर्णकर दस मासे नित्य छटॉक भर सद्यः गोदुग्धमें घोलकर ८० दिन पीनेसे बुढ़ापेमेभी बालसफेद नहीं होते और शरीरमे झुरी नहीं पड़ती तथा यह योग बहुत पुष्टभी है–पर यदि अधिक गुण चाहे तो स्त्रीसंग और लवण खटाईका पथ्य करे ॥

(२) तथा निबोलीकी गिरीको भंगरेके रसकी भावना फिर लहसुनके रसकी भावना दे फिर उसका

१ माय यूनानीवाले और साधारण लोग बालसफेद होनेका हेतु नजल (शारीरिक वाष्प) भी बताते हैं ॥

नेत्रोंकी ज्योति मंद होनेके कारण प्रायः ये होते है इनसे बचे रहना श्रेष्ठ है ॥

(१) मूर्द्धा (दिमाग) को विशेष गरमी या सरदी पहुँचना ॥

(२) अधिक धूप, अग्नि, रोशनीको विशेष देखना ॥

(३) बहुत गरम २ जल शिरपर अधिक डालना ॥

(४) नेत्रोंको बहुत गरम सरद तेज हवाके झोकें लगना ॥

(५) नेत्रों में अधिक धुवां और भाफ लगना विशेषकर जहरीली वस्तुवोंकी भाफ बहुतही बुरी है ॥

(६) बहुत बारीक वस्तु बार २ देखना तथा बहुतही नन्हे अक्षर लिखना या पढ़ना विशेष संध्यासमय या क्षुधाके समय ॥

(७) बहुत सफेद या और कोई तेज रंग अधिक देखना ॥

(८) रूखा भोजन और शिरपर तेल न लगाना ॥

(९) लेटे २ गाना या पढ़ना या लिखना ॥

(१०) मिट्टीके तेलकी उघाड़ी रोशनी ॥

(११) अति मैथुन और अति परिश्रम शोक ॥

(१२) तेज औषध कुचला अधिक कुनैन आदि

(२) डाढ़ी मूछोंके वाल वनवाने (क्षौर) के पीछे
काल ठंढापानी न लावें वल्कि उसी समय तेल
गाना उपकारक है ॥

(३) वबूल (कीकर) के वकलेमें अष्टमांश भुनी
टकड़ी तथा सेंधानमक और सोलहवां भाग अकर-
। लोग मिलाकर नित्य या दूसरे चौथे दिन मलाकर
र जलसे धोडाले इस मंजनसे दाँत वहुत दृढ़ होते
रुधिर जाताहो तो भी श्रेष्ठ है और मैलभी साफहो ॥

(४) तेजवंती तथा खदिर एवं वबूल की दँतोन
याकरे या कभी २ इनका वकला चवावे ॥

(५) यदि दांतो मे दरद हो तो कुरंट पियावासेके
ं मले—इससे भी दरद नाश होता है और दाँत
दृढ़ होते है ॥

नेत्रोंकी ज्योति कायम रखना।

नेत्रो तथा दृष्टिसंवंधी अनेक रोग है जिनका विस्तृत
र्णन इस छोटीसी पुस्तक मे समस्त नही होसका
तु ऐसी साधारण युक्ति इसमे वर्णन करते है जिन-
अनुसार करनेसे कोई उपाधिही न हो तथा वृद्ध
वस्थातक दृष्टि मंद होही नहीं ॥

नबर २ का मजन तथा वबूलका वकला कभी २ चवातेरहना
हुतही श्रेष्ठ है—इसकी हजारो वार परीक्षा हुई है इससे वुढापे तक
दाँत मजवूत रहते हैं ।

(६) नवनीत (माखन) या ताजा घी एक तोल मिश्री १ तोला बदामकी गिरी पॉच स्याहमिर्च १ सबको मिलाकर होसके तो नित्य खाना ॥

(७) गोघृत २ तोला इसमें ४ रत्ती केशर अ वा एक रत्ती कस्तूरी मिला रखना इसमें से नित नास लेना ॥

(८) त्रिफलापाक (अतरीफल) दो तोले नित वसंत (फाल्गुन चैत्र) में ४० दिन हरसाल खाना ॥

(९) अनुमान आठवें दसवें दिन रसांजन (रसौत आदिसे ऑखोंका मलिनजल और मैल निकाल देन

(१०) दो चार छह महनिमें एक दो बार किसी उत्त नस्य (नास से)मूर्द्धादि मार्गकी सफाई कर लेनी ॥

गोडों और कमर आदिका दुखना ।

यह बात पहले वर्णन हो चुकी है कि वृद्ध अवस्था में और निर्वलतामें वायुकी प्रबलता बहुत हो जाती है बस वायुहीके कारण गोड़े (घुटने) कमर आदि अंग दूखते हैं इनका कारण उस समय थोड़ीसी सरदी या पवन ठंढापानी विषम आसन आदि होते हैं ॥

उपाय ।

(१) अदरकका पाक सरदीके समय खानेसे गोड़ों और कमरके दुखनेमे बड़ा लाभ होता है ॥

तथा अन्य गरम तीक्ष्ण औषधि विशेष खाना अथवा गरम रूक्ष अन्य वस्तु सेवन ॥

(१३) मल मूत्र आदिके वेग रोकना विशेषकर अश्रु (आंसू) रोकना ॥

(१४) निकम्मी, या ऐसी ऐनक लगाना जिसमें बहुत बड़ा आकार दीखे ॥

नेत्रोपकारक वर्ताव ।

निम्न लिखित बाते नेत्रोंके लिये परम हित और बहुत गुणकारक है ॥

(१) आँखो और मुँहको नित्य ठंढे पानीसे धोना

(२) चौथे आठवे दिन त्रिफलाके जलसे धोना विशेष कर वसंत ऋतुमें ॥

(३) नित्य नयनामृत अजन या कोई और योग्य अजन डालना ॥

(४) ऋतुओंके अनुसार मस्तक पर अनुलेपन लगाना ॥

(५) शिरपर तैलाभ्यंग नित्य करना विशेषकर क्षौरके पीछे तत्काल ॥

---

१ यह वर्ताव स्वस्थ (तन्दुरुस्त)के लिये है यदि कोई रोग हो तो वैद्यसे पूछ लेना या हमारे आरोग्यसुधाकर मासिक पत्रमे विस्तारपूर्वक देखलेना ज्वर और जुखममें शिरमे तैल लगाना वर्जित है और भोजनके पीछे अजन इत्यादि ॥

फिर श्वास (दमा) हो जाता है—इसकी औषध प्रायः तर गरम और क्षीणता नाशक है॥

वक्तव्य इसमें यह है कि यह बात इसमें बिचारना अवश्य चाहिये कि गरमीसे या सरदीसे,मुख्य लक्षण ये हैं कि गरमीके श्वासमें कंठकी १ नली चौड़ी होजाती है जिससे हौंकनी सी लग जाती है और सरदीके श्वासमें नली सुकड़ जाती है जिसे रुक २ और टूटकर दम लिया जाता गरमीके श्वासकी दवा सरद तर और सरदीके श्वास की गरमतर औषध है—इन बातोंकी व्याधि होनेप किसी वैद्यसे सलाह लेनीभी उचित है पर बुढापे श्वास विशेष सरदीसे ही होता है॥

परंतु वृद्ध अवस्था का श्वास प्रायः असाध्य होता है इसके लिये प्रायः ये वस्तु उपकारक होती हैं॥

(१) बदाम और खशखशका हरीरा॥

(२) गरम २ सयात्र हलुवा॥

(३) हरे बेदाना अंगूर॥

(४) यदि किसी योग्यवैद्यके हाथका यथोचित बना हो तो कृष्णाभ्रककी निश्चंद्रिका भस्म यथायोग्य अनुपानके संग सेवन करना श्रेष्ठ है॥

---

१ श्वास ५ प्रकारके वैद्यकमें लिखे है पर बहुधा मनुष्योंको तमक श्वास होता हे शरदीसे तमक श्वास होत हे और गरमीसे इसके विपरीत प्रतमक श्वास देखो (भा० प्र०)

(२) असगंध पाक या लहसनपाक (जो खाये तो)

(३) मेथीपाक सरदीमे खाना—परंतु कइयोंको नेत्रोंकेलिये हानिकारक होता है—इसे देखलेना चाहिये

(४) सहँजनेके गोदको घीमे तलकर खांड (चीनी) डालकर मेवा आदि मिलाकर सरदीमें खाना.

(५) यदि गोडे अधिक दूखते हो तो नित्य थोड़ी टहलकर निवाया दूध शहदके संग खड़े २ पीना ॥

(६) तीन चार मासा सोंठका चूर्ण फॉककर गरम जल पीना ॥

वक्तव्य—उपरोक्त उपाधियों (जरा व्याधियों) के लिये जो ये उपाय वर्णन किये एक दो दिनमें बहुत कुछ गुण नहीं कर सकते इससे महीना दो महीनातक निरंतर यत्न करना उचित है ॥

बहुत लोग कुचला आदिके टुकड़े या लड्डूवनाकर खाते है—हमारी समझमें उचित नही क्योंकि बहुत रूक्ष गरम और नेत्रोके लिये हानिकारक है ॥

श्वास।

बुढापेमे क्षीणतासे बहुतोको पहले खांसी और

यदि तरुण अवस्थामे कोई अंग वायुआदिसे दूखे तो नारायण तैल या लोवानका तैल मलना और उठे नबरका यत्न करनाही बहुत अच्छा है।

सुखा पिट्ठी बनावे तीन पाव घृत डालकर उसे फिर भूने जब लाल रग होजाय उसमें निम्नलिखित औषध डाले पीपली सोंठ जीरा दो दो टकेभर, धनियाँ तेजपात इलायची स्याहमिरच दालचीनी ये सब एक २ तोला फिर पाँचसेर मिश्रीकी चासनीमें डालकर पाक बनावे और डेढ़पाव शहद डाले चाँदीके वरक तीनमासा इसे एक छटाँक नित्य खानिसे क्षयो क्षीणता रक्तपित्त प्रद वीर्यविकार क्लीवता नाश हो शरीर पुष्ट हो ॥

गोखरूपाक।

गोखरूका चूर्ण १ सेरले ४ सेर दूधमे डाल खोव बनावे फिर जावित्री लौंग लोध मिरच भीमसेनी कप नागरमोथा संभलका गोंद आँवला पीपल केशर दाल चीनी पत्रज इलायची नागकेशर कँवचबीज अजव यन इन औषधोंमें सब एक २ तोला केशर ६ मा कपूर भीमसेनी ३ मासे डाले और १ छटाँक भाँग घे हुऐ डाले फिर खोवा और ये सब वस्तु ले, २ घीमें मंदाग्निसे भूने फिर पाँच सेर मिश्री या खाँड चासनी कर पाक बनावे चाँदीके पत्र यथोचित ल चार तोला नित्य खाय बड़ा बलकारी है प्रमेहमें व गुण करता है तथा बवासीर और क्षयी क्षीणतामें ब हित है ॥

बुढ़ापे की साधरण (योग्य) खुराक।

(१) निवाया २ दूध ॥

(२) संयाव (हलुआ) या हरीरा ॥

(३) चूरमा (मलीदा) ॥

(५) संगृहीताध्याय।

इस अध्यायमें पूर्व लिखित पाकों और अन्य औष-
धोंके बनाने आदिकी विधि तथा इतर फुटकर बातें
हैं और ग्रंथ समाप्ति ॥

लवंगादिचूर्ण।

लवंग शुद्धकपूर इलायची नागकेसर जायफल खश
५ स्याहजीरा कृष्णअगुरु वंशलोचन जटामांसी
कमल पीपली चंदन तगर सुगंधबाला कंकोल
का चूर्ण कर सबसे आधी मिश्री मिला ६ मासे नित्य
नेसे यक्ष्मा (क्षयी तमक) श्वास खाँसी अति-
र प्रमेह अरुचि संग्रहणीआदिको हितहै यह चूर्ण
पन और पाचन है ॥

(पाक)

कूष्मांडपाक (पेठापाक)

पके पेठेका गूदा पावसेर दूने जलमें डाल मंदी
आँचसे गलावे आधाजल रहनेपर निचोड़ धूपमें कुछ

भर ले घीमें भून खोवेमें मिलावे फिर ढाईसेर मिश्रीकी चासनी बनाकर पाक बनावे और बादामकी गिरी चिरौंजी खोपरा आध २ पाव डाले और लौंग जायफल दालचीनी पत्रज छोटी इलायची जावित्री नागकेशर सोंठ मिरच पीपल सब औषध एक २ तोला शुद्ध वंग हो तो १ तोला चाँदी अथवा सुवर्णके वरक ६ मासा डाल आधी २ छटाँक के लड्डू बनावे एक या दो यथाबल नित्य खाय यह पाक वाजीकरणमें सबसे श्रेष्ठ है बहुतही पुष्ट है इससे क्षीणता क्लीवता कमजोरी मंदाग्नि प्रमेह सब नष्टहों यह पाक पुरुषोंको अवश्य प्रति वर्ष खाना श्रेष्ठ है॥

असगंधपाक।

असगंध आधासेर उससे आधी सोठ सोठसे आधी पीपल पीपलसे आधी मिरच सबका चूर्ण ८ सेर दूधका खोवा बना चूर्ण डाल घी सेर १ में भून ४ सेर मिश्रीकी चासनीमें पाक बना शहद १ सेर डाले॥ और तज पत्रज इलायची नागकेशर पीपलामूल लौंग तगर जायफल नेत्रवाला चंदन नागरमोथा वंशलोचन आँवले खैरसार चित्रक शतावरी इनको छः छः मासे डालकर उतारले सरदीकी ऋतुमें दो तोले नित्य खाय तो शिथिल पुरुष तीव्रहो तथा आमवात गठिया

सुपारीपाक।

दक्षिणी सुपारीका चूर्ण आधसेर भिगो सुखा महीन पीस बराबरके घीमे भरकोय अठगुने दूधमे पकाकर मावा बनावे फिर ४ सेर मिश्रीकी चासनीकर मावा डालकर पाक बनावे ये औषध पहले डालदे इलायची खरेंटी गँगेरणकी छाल लवंग जायफल जावित्री पत्रज सोंठ शतावर मूसली कवँचके बीज बिदारीकंद गोखरू सालममिसरी वंशलोचन असगंध चंदन अगर ये औषध सब एक २ टकेभर कस्तूरी मासा २॥ भीमसेनी कपूर मासे २॥ फिर एक टके भर नित्य खाय तो सब प्रमेह दूर हों नपुसकता जाय मैथुनशक्ति बढ़े यह पाक अतिपुष्ट वाजीकरण है स्त्रियों-कोभी हित है॥

शतावरीपाक।

इसकी क्रिया गोखरू पाकके समान है यह पाक वीर्य बढ़ानेवाला धातु उत्पन्न करनेवाला पित्तप्रमेह और वीर्यकी क्षीणताजन्य क्लीवतामें परम हित है परंतु इसमे भाँग और लोध नहीं डालनी चाहिये॥

मूसलीपाक।

सफेद मूसलीका चूर्ण आधसेर पावसेर घीमें भरकोय पाँच सेर दूधमें खोवा बनावे फिर बबूलका गोंद पाक

स्ते खोपरा एक २ छटॉक इलायची जावित्री जायफल एक २ तोला लौंग छःमासा केशर अकरकरा तीन २ मासा कस्तूरी डेढ़ मासे वरक चॉदीके ३ मासा डाल हलुवासा बना चीनीके पात्रमें रखले दो तोला नित्य सरदीमें खाया मूर्धा दिमाग को बहुत पुष्ट करता है वीर्य बल बढ़ाता है अमीरोंके लायक उम्दह चीज है॥

नारियल (खोपरा) पाक।

दूध एक सेर खोपरा १ जावित्री जायफल केशर छः २ मासे इसवगोलकी भूसी एक तोला॥
छुहारे चिरौंजी अखरोटकी गिरी बादामकी गिरी एक छटॉक मिश्री १ सेर॥

चारों दवा खोपरेमें भरदे फिर खोपरा और मेवे दूधमें पकावे फिर सवकी पिट्ठी बना दूधका खोवा कर रले फिर पावभर घीमे इसे भूने और पिसी मिश्री मिलाकर एक २ छाटॉकके लड्डू बनाले यह बहुत पुष्ट है बहुत बलकर्त्ता है॥

प्रमेह तथा धातुका पतला पड़ना इनमें बहुतही गुणदायक है पुष्टता सहित स्तंभनभी है और ग्राही है॥

ऑवलापाक।

पावभर ऑवलोंको दूधमें भिगोकर मावा निकाले

श्वास खाँसी शूल वादीके रोग सब नष्टहों इसकी प्रकृति गरम है इससे शीत समय प्रभात खाना और कफ वादी प्रकृती पुरुपको हित है वृद्धकोभी तरुण करता है पर पित्तप्रकृति मनुष्य न खाय॥

आम्रपाक।

पके हुए मीठे आंत्रका रस १६ सेर, मिश्री ४ सेर घी १ सेर इन्हें मिट्टीके पात्रमें पका चासनी कर गाढ़ा होनेपर ये औषध डाले सोंठ मिरच पीपल धानियाँ जीरा चित्रक तज पत्रज इलायची नागकेशर सब दो दो तोले लौंग जायफल जावित्री एक २ तोला केशर ६ मासा कस्तूरी ३ मासा और शहद पावसेर सब एकत्र कर चीनीके पात्रमे रक्खे सरदीके समय दो तो-ले नित्य खाकर दूध पीवे तो धातुवृद्धि हो और वहु-त पुष्टता हो नपुंसकता क्षीणता रहै नहीं यह पाकभी कुछ २ गरम है वातप्रकृति रूखे पुरुपोको हित है तथा क्षयी ग्रहणी पांडुमें श्रेष्ठ है॥

वादामपाक।

पावसेर वादामकी गिरी गरम जलमें भिगो छिलका उतार पिट्ठी पीसलें चार सेर दूधमे उसका खोवा वना दो सेर कंद या मिश्रीकी चासनीमें पाक वनाकर पि-

निस्तुपकर पिट्ठी ❀ वना चार सेर दूधमें खोत्रा करे- और घी पावभर डालकर भूने-और ये औषध डाले रास्ना वासा शतावरी गिलोय सोंठ देवदारु वृद्धदारु (विधायरा) अजवायन चित्रक सौंफ त्रिफला पीपल विडंग सब एक २ तोला सबके समान मिश्री दे पाक वनावे शहद पावभर डाले ॥

इसको एक तोलासे ३ तोला तक यथाबल खाय तो गोड़े कमरका दुखना अकड़ना संधिपीड़ा (गठिया) वातव्याधि बुढ़ापेके सब वायुरोग नष्ट हों तथा ऊरुस्तंभ हनुग्रहआदि सब (८४) वातव्याधि नाशहों बल पुष्टि बढ़ें ॥

मेथीपाक।

प्रायः देहाती लोग इसे बहुत पसद करते हैं मेथीका चूर्ण १ सेर तैल १ सेरमें एक महीना भिगोवे फिर ४ सेर गुड़ या मीजॉ खॉडकी चासनी करे मेथीको मंदी ऑचपर उसी तेलमें भूनकर चासनीमें डालदे और भूना हुआ गोंद पावभर सोंठ मिरच पीपल दो २ तोले डाले इसमेंसे दो तोलेसे ४ तोले तक अति सरदीमें खावे कमर और गोडों (घुटनों) का दुखना अकड़ना आदि सब वायुके रोग जायँ यह पाक बहुत गरम है ॥

❀ गिलोय और कोई गीली दवा पहले लहसनकी पिट्ठीमें पीसके

उस मावेमें दो सेर कंद या मिश्री डालकर चासनी ाकावे और पेठापाकोक्त औषधि डाले और चाँदीके ारक २ मासा डालकर हलुवासा बना चीनीके पात्रमे ाखले दो तोले नित्य वसंत या गरमीमें खाय धातुको ादा करता और वढ़ाता है दीपन और पाचन है यह ाठा है पित्तप्रकृतियोंको तथा पित्तप्रमेहमे वहुत ाच्छा है रक्तपित्त और दस्तोमे गुणकारी है जिगरकी ारमीको खोता है ॥

आर्द्रकपाक ।

एक सेर आर्द्रक छील पिट्ठी बनावे फिर २ सेर दूधमे ाोवा करे और आधा सेर घी डालकर उसे भूनले फिर २ सेर कंद या चीनीकी चासनी कर पाक बनावे ापिली पिपलामूल मिरच चित्रक मोथा नागकेशर ालचीनी पत्रज सब एक २ तोला डाले दो तोलासे छटॉक तक नित्य खाय तो कमर और गोड़ोंका दुखना बंद हो तथा शीत पित्त (पित्ति) श्वास खाँसी वातरक्त गुल्म क्षीणतामे हित है दीपन पाचन है बल और जठ-राग्निवर्द्धक है ॥

लहसनपाक ।

जो लोग लहसन खाते हैं उन्हें चाहिये कि १ सेर लहसन

५०० ले मिट्टीके पात्रमे २० सेर जलमें सबको उ
वाले अष्टमांश जल रहे तब निचोड़ ले आँवलोंकी गु
ठली निकाल पिट्ठी बनावे और अधासेर घीमें भूने फि
उस पूर्वोक्त निचोड़े क्वाथमें २॥ सेर मिश्रीकी चासनी
कर पिट्ठी डाले और डेढ़ पाव शहद दे अवलेह बनावे
तज पत्रज इलायची बंशलोचन चार २ मासे दे—इसे
तोलासे चार तक नित्य खाय तो महाक्षीणता निर्वलता
क्षयी रक्तपित्त वीर्यदोष सब मिटें कहते हैं च्यवन ऋ
वृद्ध इसीसे पुनः तरुण हुएथे ॥

आसव और अरिष्ट।

औषधोको अधिक जलादिमें डाल मिट्टीके पात्र
भर मुँह बंदकर (खाम) एक महीना रक्खे या
थ्वीमे गाड़ दे फिर छानकर बोतलोंमे भरले इसे आस
कहते हैं ॥

तथा औषधियोंको उनके क्वाथमें पूर्वोक्त रीतिसे ए
मास तक साधन करे तो वह अरिष्ट कहलाता है इनक
एक वार पीनेकी मात्रा १ छटॉकके लगभग है ॥

इस समय के सफाईपसंद लोग आसवको भभके
खींच लेते है पर शायद गुणमें कुछ फरक होजाय

दशमूलारिष्ट।

दशमूल चित्रक पुष्करमूल पचीश २ छटाँक, लों

कई लोग इसमें वरावरका गेहूँका आटा घीमें [illegible]नकर डालते है और लड्डू वना लेते है ॥

त्रिफलापाक ।

आधपाव त्रिफलाचूर्ण १ पावभरजलमें भिगो पावभर [illegible]में मंद अग्निसे सेंके फिर एक सेर मिश्रीकी चासनी डाले पुष्करमूल चित्रक मिरच सोंठ पीपल इला-ची मोथा तज पत्रज सव आठ २ मासे निस्तुप धनियाँ [illegible] तोला शुद्ध शिलाजीत और केशर छह २ मासे [illegible]द पावभर डाले—इसमेंसे दो तोलेसे चार तोला [illegible] नित्य या दो २ तोला दोनों समय खाय तो सव [illegible]कारका प्रमेह जाय शिरके सव रोग नेत्राभिस्यंद [illegible]नीवहना (प्रतिश्याय) जुकाम खून फिसाद [illegible]वमें हित है ॥

च्यवनप्राश्यावलेह ।

अरणी खँभारी पाठला विल्व अरलू गोखरू [illegible]द्रा पीपल काकड़ासिंगी मुनक्का गिलोय हर्रे खरेंटी-[illegible] दो मासा वाराहीकंद विदारीकंद मोथा पुष्कर-मूल वनमाव वनमूंग असगंध कमलफल मुलहटी इला-यची अगर श्वेतचंदन सव पल २ भर और पक्के ऑवले

१ एक भाग हर्र दो भाग वहेडा चार भाग आंवला यह ऐसे लेना ॥

टा २ छ० तज पत्रज इलायची एक २ छ० नागकेश
२ छ० दे सावन करे इससे प्रमेह मूत्रकृच्छ्र (सुजाक
बवासीर नष्टहो ॥

बबूलारिष्ट।

बबूल का बकला ५ सेर १ मन जलमे पकावे १
सेर जल रहने पर २॥ सेर गुड़ धायके फूल ८ छ० पं
पल २ छ० जायफल शीतलचीनी तज पत्रज लौंग मि
केशर एक २ छ० डाल संधित करे इससे क्षयी क्षीणत
(यक्ष्मा) कुष्ट दाद खाज प्रमेह दूर हो ॥

द्राक्षासव।

मुनक्का २॥ सेर मिश्री १० सेर बेरीकी जड़
सेर धायके फूल ढाई पाव सुपारी ५ छ० जावि
जायफल लौंग एक २ छ० त्रिफला ३ छ० सौफ दा
चीनी इलायची पत्रज दो २ छ० सोठ मिर्च पीप
एक २ छ० नागकेशर २ छ० अकरकरा कूट एक
छटॉक केशर १ तोला कस्तूरी ३ मासा।

पहले मुनक्काको १६ गुने पानीमें उबाले आधारे
सब औषध डालकर संधितकरे इसके पीनेसे शरी
बलिष्ठ हो पुष्ट हो धातु बढे सुंदर रूप हो मल शुद्ध हो यह
आसव अमीरोंको परम सुख देता है ॥

गिलोय २० छ०, ऑवला १६ छ०, जवासा १२छ०, खैर बिजैसार आठ २ छ०, कूट मजीठ देवदारु डंग भारंगी वहेड़ा चव्य जटामांसी स्याहजीरा नि- थ रास्ना पीपल सुपारी दोनो हलदी सौफ पद्माख ना- केशर मोथा इंद्रयव सोठ दोनो कसेली सब दो २ छ० को अठगुणे जलमें क्काथ करे चतुर्थांश रहे उतार और ४ सेर मुनक्का १६ सेर पानीमें उबाले १२ सेर रहे रले छानकर दोनों क्काथ मिलादे फिर २ सेर श- , पुराना गुड़ या मिश्री १६ सेर डाले धायके फूल दचीनी खश चंदन जायफल लौग दालचीनी इला- ी पत्रज एक २ छ० केशर २ तोला कस्तूरी ४ मा- डाल संधित कर गाड़ दे एक मास पीछे निर्मलकर े सब प्रमेह नाशहो शरीर महापुष्टहो क्षय आदि सब ा नष्टहों रूप सुंदर हो ॥

देवदारुअरिष्ट।

२॥ सेर देवदारु १। सेर रूसा (बासा) मॅजीठ इंद्रयव दॅतून तगर दोनों हलदी रास्ना विडग मोथा सिरस खैर अर्जुन आध २ सेर अजवायन कुरा चंदन गिलोय कुटकी चित्रकभी आध २ सेर ४ मन जलमे प- कावे १ मन रहे धायफूल १ सेर शहद १६ सेर त्रिकु-

त्रिफलाघृत।

त्रिफला आधसेर, त्रिकुटा २ छटॉक चित्रक १ छ
गोखरू १ छ० दारु हरिद्रा १ छ० देवदारु १ छ०
गिलोय १ छ० सबको १६ गुने जलमें क्वाथ क
चौथाई रहे एकसेर घृत साधन करे घृतमात्र रहे १
दो तोला तक नित्य खाय तो सब प्रमेह विशेष क
वायुके प्रमेह) भी नष्टहों मूर्द्धा (दिमाग) में बल
शिरके रोग और नेत्र के रोग जाय॥

बदामका हरीरा।

बादामकी गिरी पिस्ते चिलगोजेकी गिरी अखरो
टकी गिरी एक २ तोला, सफेद खशखश तीन तोला सूख
निशास्ता तीन तोला घी २ तोला मिश्री आधपा
खशखशको रातभर भिगोदे सबेरे पीसकर आधसे
जलमें मावा निकालले और गिरियोंको भी पीसले नि
शास्तेको घीमें भूनले फिर गिरी और खशखशका शी
और मिश्री पिसी डालकर मंदी ऑचसे हरीरा पका
इसे बलके अनुसार खाये तो मूर्द्धा (दिमाग) को
बहुत ताकत हो चेहरेका रूखापन शिरमें घूमनी चक्क
आने मिटै बहुत बल वीर्य बढ़े॥

बादामका हलुवा।

आधसेर बूराकी चाशनीमें छिले हुए बादामोंकी

घृतसाधन ।

सिंहामृतघृत ।

कटेली और गिलोय ढाई २ सेर कूटकर १ मन
ऽमें क्वाथ करे १० सेर रहे १। सेर घृत ले और त्रि-
ः त्रिफला विडंग चित्रक खँभारी सब एक २
ला ले क्वाथ करे फिर दोनों क्वाथ ले घृत डाल मंदी
चसे पकावे घृतमात्र शेष रहे उसमेंसे १ तोलाके
ुमान नित्य खानेसे वायुका असाध्य प्रमेह नाश
शरीर पुष्टहो ॥

धन्वंतरिघृत ।

दशमूल करंज देवदारु हर्रे वर्षाभू वरुणा दंती
वत्र सटी सुधापीन कदंब विल्व कचूर पुष्कर-
र पिप्पलामूल सब एक २ छटॉक यव कोल कुल्थी
5 सेर पूर्वोक्त औषधोंका क्वाथ अलग करे धान्यों
अलग उबाले ॥

तथा सोंठ विडंग चव्य कंपिल्ल त्रिफला भारंगी
ड़ा गजपीपल इन्है अलग सिद्ध करे सबका क्वाथ
त्रित कर एक सेर घी सिद्धकरे घृतमात्र शेष
ः एक तोलासे दो तोला तक नित्य खाय तो प्रमेह
ठ गुल्म वातरक्त प्लीहा उदररोग ववासीर और मृगी
ग नष्ट हों ॥

(छवेके संग) और प्रमेह क्षयीमें शहदके संग लोह
ं पानके संग खाना उचित है इससे सूखी और रक्त
ी पुनर्जीवित होजाती है इससे इसे धातु लोह
ी कहतेहैं ॥

नयनामृत अंजन।

उत्तम शीशा ले गला गलाकर तैल छाँछ गोमूत्र
कांजी कुलथीकाथ और त्रिफलाकाथ इन सबमें तीन
तीन वार बुझावे फिर सिंगरफको नींबूके रसमें घोट
हंडियाके पेंदे मे लगा ऊपर दूसरी हँडिया औंधी रख
मुंह मूद नीचे आँच जलावे ऊपर गीला कपड़ा रक्खे
जब सिगरफका पारा ऊपर जालगे उतार ठंढाकर धोले
और सुरमेको तपा २ नीबूमे सात वार बुझावे ॥
तथा मिलसके तो स्त्रीके दूधकी ७ भावना दे इस भाँति
जब तीनो शुद्ध होजावे तब एक तोला शुद्ध शीशा
उसमे एक तोला उक्त पारा मिलावे फिर दो तोले शुद्ध
सुरमा मिला ७ दिन खरल करै और दशवाँ भाग भीम-
सेनी कपूर ले-इस अजनसे नेत्रके सब विकार मिटे
और दिव्य दृष्टि रहे ॥

शिलाजतुशोधनादि।

यद्यपि सब धातुओंकी शिलाजतु होतीहै परतु

सी पिट्ठी डालदे और हिलाते रहे खून
अनुमानका गरम २ घी डालकर पक
ायची चाँदीके वरक आदि मसाला डाले ॥
यह हलुवा वहुत वलदायी वीर्य वढ़ानेवाला
र देनेवाला अमीरोंके लायक है सरदीमें आ
ज तक खा सक्ते है ॥

मलाईका हलुवा।

पावभर मलाईमे आधसेर कंद डालकर मंदीआँच
र रक्खे और हिलावे जव मिलजाय पावभर घी
रम करके डालदे और हलुवा वनजाय तव मेवा
लायची चाँदीके वरक डालकर उतारले वहुत पुष्टाई
रता है वीर्यको पैदा करता और वढ़ाता है अमीरोंके
ायक है इसे १ छटाँकसे आधपावतक खा सक्ते है ॥

कस्तूरीगुटिका।

कस्तूरी २ भाग सुवर्णके वरक एक भाग चाँदीके
रक ३ भाग केशर ४ भाग छोटी इलायचीके वीज
भाग जायफल ६ भाग वंशलोचन ७ भाग जावित्री
भाग इन सवको वकरीके दूधमें व पानके रसमे
३ दिन खरलकर एक २ रत्तीकी गोली वनावे ॥

इनमेसे एक या दो गोली नित्य (यदि धातु मूख
ाईहो या नष्ट होगई हो तो मलाईके संग या ऊपरोक्त

क्रय्यपुस्तकोंकी संक्षिप्त-सूची.

नाम.	की रु. आ.
वैद्यक ग्रंथाः।	
चिकित्साधातुसार भापा ...	०–६
रसराजमहोदधिभापा प्रथमभाग–वैद्यक यूनानी हिकमत और यूनानीदवा और फकीरोंकी जड़ी बूटी और सन्तोंके पुस्तकोका संग्रह है	०–१ः
रसराजमहोदधि दूसराभाग (उपरोक्त सर्वालंकारों समेत छपकर तय्यार है) ...	०–१
अमृतसागर कोपसहित (हिन्दुस्थानी भापामे) सर्वदेशोपकारक	२–
डॉक्टरी चिकित्सासार भापा (अ. दे. वै) ..	०–१
व्यंजनप्रकाश (नैमित्तिक भोजनके समस्त पदार्थ अचारादि बनानेकी सुगमता गुण)	०–
शालिहोत्र नकुलकृत (घोड़ोके शुभाशुभ लक्षण और उनके रोगोकी औपधि)	०–
पशुचिकित्सा अर्थात् वृपकल्पद्रुम छन्दबद्ध (इस में बैल, भैसोंके शुभाशुभ लक्षण यंत्र चिकित्सा पहिचान भलीभाँति लिखी है)	१–
करिकल्पलता (हाथियोंकीपहॅचान तथा दवा)	१–
तिब्बअकबर (हिन्दीभापा) ..	७–
योगमहोदधि भापा ...	०–
चक्षुरक्षक ...	०–

लोहज सबमे श्रेष्ठ है पर्वतसे गरमीमे टपकता ० रंगत रक्तता लिये कालीहो गोमूत्रगंधिहो अधिक श्रेष्ठ लोहज हो तो चुंबकसे चिपक जाय ॥

शोधन।

शिलाजीतको चूराकर जलमें डालकर औटावे फिर २ प्रहर रख छोड़े जो ऊपर मलाईसी हो उतारले फिर इसी प्रकार करे ऐसे ३० बार कर सब बार मलाई इकट्ठी करता जाय शुद्ध शिलाजीत यही है ॥

बिना शुद्ध शिलाजीत कभी न वरते, क्योंकि इसमे कई भाँतिके मल होते हैं ॥

यद्यपि इसके शोधनके और भी कई प्रकार हैं पर यह सबसे श्रेष्ठ है ॥

यह शिलाजीत प्रमेहकी बड़ीही सिद्ध और श्रेष्ठ औषध है कैसा ही प्रमेह हो यह सबको गुणकारी है और यथोचित अनुपानसे सब रोग हरती है ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् यन्त्रालय–बम्बई